आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 60 अंक : 09

सितम्बर, 2003 भाद्रपद, 2060

सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान सम्यक चारित्र

इनपर हमारा विश्वास है और इनका
आचरण ही हमारी परंपरा है।
इसीलिए हमारे स्वर्ण आभूषण
भी इतने शुद्ध और सुसंस्कारीत होते हैं,
कि मानो वे सम्यक आभूषण
प्रतीत होते हैं।

आभूषणों पर अंकित
सोने की शुध्दता का विश्वास.
परम्परा और आधुनिकता के
समन्वय से निर्मित
हजारों डिजायनों की
अत्यन्त विस्तृत शृंखला.
उचित मूल्य.

टीप : निवास व्यवस्था पूर्व
सूचना मिलने पर की जाएगी।

malhar 11.5x19/1463

पारस महल
चांदी
बरतन शोरूम

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सुभाष चौक, जलगांव, दूरभाष्य : २२२३९०३, २२२५९०३, २२२२६२९,३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरूम
डायमंड शोरूम

'शुध्द आहार हमारी कहीं भी शाखा / एजंट नहीं. शाकाहार'

सुचना :– मई अंत तक शोरूम रविवार को सुबह १० से शाम ६ तक खुला रहेगा।

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● **प्रकाशक**
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● **सम्पादक**
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● **सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र**
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● **सम्पादक मण्डल**
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

उण्हाहितत्तो मेहावी,
सिणाणं णो वि पत्थए।
गायं णो परिसिंचेज्जा,
ण वीएज्जा य अप्पयं।।
–उत्तराध्ययन सूत्र २.९

उष्ण ताप से तप्त प्राज्ञमुनि,
स्नानेच्छा न मन लाए।
करे न गीला तन जल से,
पंखे से न हवा खाए।।९।।

सितम्बर 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
भाद्रपद, 2060

वर्ष : 60 **अंक** : 09

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

समत्व की साधना : सामायिक (4)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	7
कषाय–विजय का करें जतन	: उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	11
क्रोध है कितना अनर्थकारी ?	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	21
मृत्यु से क्या घबराना	: डॉ. एस.एस. भाण्डावत	28
सम्प्रदायमुक्त धर्म : एक चिन्तन	: श्री पदमचन्द गांधी	30
जैन धर्म और अध्यात्मवाद	: डॉ. बिमला भण्डारी	32
ज्योतिष और अध्यात्म	: श्री तिलकचन्द तिलक	35
क्या बच्चों पर निषेध का अंकुश उचित है?	: सुश्री हेमलता मेहता	38
अमेरिकी बालकों में सेवाभाव	: श्री लालचन्द जैन	42

विचार/तत्त्वचर्चा/आगम-परिचय/संवाद

धर्मसभा में ध्यान देने योग्य बातें	: श्री चेतन सांखला	20
नमस्कार मर्मस्पर्शी	: पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी	29
आओ मिलकर ज्ञान बढाएँ	: श्री धर्मचन्द जैन	39
संयुक्त परिवार : वटवृक्ष की छांव	: श्री दिलीप धींग	46
दशवैकालिक सूत्र : चूलिका सार	: डॉ. अमृतलाल गांधी	48
सामायिक में योगानुभूति	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	49

कथा/कविता/प्रेरक-प्रसंग

दीक्षा लेवण में शांति अपार है	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	5
खिल गई भीतर की चाँदनी	: श्रीमती विमला जोटा	10
जीवन एक गूँज है	: श्री मुदित जैन	27
हीरा हस्ती की पहचान है	: महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा.	34
रत्नसंघ के मूल महापुरुष	: भण्डारी सरदारचन्द जैन	41
जीवन तो लगता छलना है	: डॉ. महेन्द्र भानावत	47

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	50
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	51
समाचार-संकलन	: संकलित	52
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	61
बधाई	: संकलित	62
श्रद्धांजलि	: संकलित	64
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	68

जैन संस्कृति की पहचान

डॉ. धर्मचन्द जैन

राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में ३ सितम्बर २००३ को आयोजित बैठक में मन्त्रिमण्डल ने जैन धर्मावलम्बियों को अल्पसंख्यक घोषित करने का निर्णय कर जैन धर्म एवं संस्कृति को पृथक् पहचान प्रदान की है। मन्त्रिमण्डल के इस निर्णय के अनन्तर राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यादेश-२००१ में संशोधन हेतु राज्यपाल माननीय श्री निर्मलचन्द्र जैन ने भी हरी झण्डी प्रदान कर दी है। राजस्थान के जैन समाज के विभिन्न घटकों ने राजस्थान सरकार के इस निर्णय का स्वागत किया है तथा सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया है। जैन समाज के अल्पसंख्यक घोषित होने से पूर्व राजस्थान में मुसलमान, ईसाई और सिक्ख ही अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त थे। अब जैन भी इसमें सम्मिलित हो गए हैं। १९९१ के आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में जैनों की संख्या १.२८ प्रतिशत है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान के पूर्व छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश की सरकारें पहले ही अपने-अपने राज्यों में जैनों को अल्पसंख्यक घोषित कर चुकी है। राजस्थान उच्च न्यायालय ने भी जैनों को कुछ वर्षों पूर्व संविधान के अनुसार अल्पसंख्यक करार दिया था, किन्तु उच्चतम न्यायालय ने उसको अस्वीकृत कर दिया था। लगभग सात वर्षों से राजस्थान के लोग जैनों को अल्पसंख्यक घोषित करने की मांग कर रहे थे, जो अपनी इस सफलता पर प्रमुदित हैं।

जैनों के अल्पसंख्यक घोषित होने से कई लाभ होंगे, यथा- १. जैन समाज की शिक्षण संस्थाओं में जैन छात्रों को ५० प्रतिशत सीटों पर प्रवेश देने का अधिकार प्राप्त हो जाएगा। इससे जैन छात्रों को जैनों द्वारा स्थापित उच्च तकनीकी, वैज्ञानिक, प्रबन्धकीय, चिकित्सकीय आदि संस्थाओं में विशेष लाभ मिल सकेगा। आज देश में उच्च शैक्षणिक एवं तकनीकी संस्थाओं में प्रवेश प्राप्त करना भी लोहे के चने चबाने जैसा है। इस घोषणा से जैन समाज के लोग व्यावसायिक प्रशासन, मेडिकल, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर आदि से संबद्ध उच्च गुणवत्ता वाले महाविद्यालय स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित होंगे तथा जैन छात्र-छात्राओं को सहज रूप से प्रवेश का सुअवसर प्राप्त हो सकेगा। जब जैन समाज के छात्र-छात्राएँ अधिक उन्नत शिक्षा सहज ही प्राप्त करने में समर्थ होंगे, वहीं व्यवसाय के क्षेत्र में उनकी मांग रहेगी तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में देश को

वे आगे बढ़ा सकेंगे। २. जैन समाज द्वारा स्थापित एवं संचालित विद्यालयों के साथ अनुदानित विद्यालयों में भी धार्मिक शिक्षण की छूट प्राप्त होगी, जिससे विद्यालयों में जैन धर्म-दर्शन का परिचय अजैन छात्रों को भी मिल सकेगा। इससे जैन धर्म के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन मिलेगा। जैन समाज के लोगों में आत्म-विश्वास उत्पन्न होगा कि वे भगवान महावीर की शिक्षाओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में अधिक सक्षम बने हैं। ३. अल्पसंख्यक आयोग या ऐसी ही किसी संस्था में जैनों को प्रतिनिधित्व मिल सकेगा।

सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि इससे जैन-संस्कृति की राज्य में अलग से पहचान होगी। जैन धर्म अतीव प्राचीन है। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के पूर्व भी तेईस तीर्थंकर हुए हैं। जैन धर्म की मान्यता के अनुसार प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी काल में तीर्थंकर होते हैं। इस प्रकार जैन धर्म की प्राचीनता आगमों से पुष्ट है। 'जैन' के स्थान पर पहले 'निर्ग्रन्थ' धर्म शब्द का भी प्रयोग रहा है, किन्तु इससे कोई अन्तर नहीं आता है। जैन धर्म की अपनी पृथक् उपासना पद्धति रही है। जैन श्रमण-श्रमणियों का आचार-व्यवहार अनेक मर्यादाओं में आबद्ध है। श्रमणोपासकों की उपासना-पद्धति भी पृथक् रही है। यद्यपि जैन भी दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी एवं तेरापंथ समाज के रूप में विभक्त हैं, किन्तु भगवान महावीर के सिद्धान्तों को स्वीकार कर जैन कहलाने की दृष्टि से वे एक हैं। जैनों में यदि कहीं मतभेद भी हो, तो भी उन्हें मतभेद भुलाकर अल्पसंख्यक के रूप में एकता कायम करने का अवसर मिला है।

जैन समाज की सम्पूर्ण भारतवर्ष में विशिष्ट पहचान है। विदेशों में जैनों ने अपनी पहचान बनाई है। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय विमान-सेवाओं में जैन भोजन अलग से प्रदान किया जाता है। जैन-समाज मौलिक रूप से शाकाहारी है, मछली एवं अण्डे के सेवन से भी वह दूर है। विचारों से भी वह सात्त्विक है। हिंसा, आतंक एवं लड़ाई-झगड़ों से दूर रहने वाला समाज है। यज्ञ एवं पशुबलि का विरोधी रहा है। जैनों में सहिष्णुता, सदाचार एवं परोपकार की भावना कूट-कूट कर भरी है। आज देश में अनेक शिक्षण संस्थाओं के भवन जैन समाज द्वारा निर्मित हैं। राजस्थान में ही सैकड़ों शाला-भवन जैन समाज द्वारा बनाकर अर्पित किए गए हैं। गो-शाला का प्रसंग हो या चिकित्सा-सेवा का, जैन समाज उदारतापूर्वक सबका सहयोग करता रहा है।

जैनों को अल्पसंख्यक घोषित करने के बिन्दु को कोई वोट की

राजनीति भले ही समझा जाए, किन्तु लम्बी अवधि से अटका हुआ यह कार्य पूरा कर अशोक गहलोत सरकार ने जैनों की भावना का आदर किया है।

अल्पसंख्यक दर्जे को प्राप्त जैन समाज अब भीड़ में अलग पहचान बना रहा है। अब उसके आचरण एवं कार्यों को अधिक पैनी नजरों से देखा जाएगा, अतः उसे इस ओर अपनी प्रतिष्ठा को कायम रखकर सबका चहेता बनने का प्रयास करना चाहिए। ■

दीक्षा लेवण में शांति अपार है

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

थे दीक्षा ले लो, दीक्षा लेवण में शान्ति अपार है।। टेर।।

धन दौलत से काम नहीं है, विनाशिक सब साज।
अविचल पद की इच्छा हो, तो कर लो आतमकाज।। हो जी थे...

धन होयां सूं दान करांला, और मनां सा मौज।
यूं आशा में लटके भोला, भर्यो न मन को हौज।। हो जी थे...

प्रभु-सेवा या जप-सेवा, ये जीवन के शुभ कार्जे।
भाग योग से अवसर पार्यो, बांधो शिवपुर ताज।। हो जी थे...

बिन आरम्भ के घर में रहकर, जीवन चाले नांय।
निर्दूषण भिक्षा से जीणो, संयम में हो जाय।।हो जी थे...

हिंसा, झूठ, कुशील न करणो, ब्रह्मचर्य से रहणो।
संग्रहवृत्ति मूल नहीं रखनी, संतोषामृत पीणो।। हो जी थे...

तन-धन की ममता में देखो, करे पाप भरपूर।
जन-जन के प्राणों का प्यासा, हो जाता जन क्रूर।। हो जी थे...

तज कर ममता समता पाने, संयम ही हितकार।
भोग भाव त्यागन करने से, छूटे पापाचार।। हो जी थे...

धन दारा में फंसा जगत जन, करता विध-विध पाप।
छोड़ मोह पर-गुण की ममता, 'गजेन्द्र' लो निज राज।।हो जी थे..

सांवत्सरिक क्षमायाचना

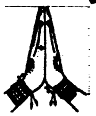

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना के साथ भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी, रविवार, दिनांक ३१ अगस्त २००३ को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवयोनि से हमने विशुद्ध अन्तःकरण पूर्वक क्षमाचायना की है। हम संघनायक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतीवृन्द के पावन श्रीचरणों में सविधि वन्दना अर्ज कर वर्ष भर में हुई अविनय-आशातना के लिए अंजलिबद्ध हो क्षमायाचना करते हैं। हम संघ के प्रेरक एवं दिशा-निर्देशक संरक्षक मण्डल, समस्त सहयोगी कार्यकर्ताओं एवं समाज के सभी सदस्यों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

रतनलाल बाफना	कैलाशचन्द हीरावत	अरूण मेहता
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

चेतनप्रकाश डूंगरवाल	ईश्वरलाल ललवाणी	प्रकाशचन्द डागा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

हार्दिक क्षमायाचना

जिनवाणी के लेखकों एवं पाठकों का हमें सदैव रचनात्मक सहयोग प्राप्त होता रहा है। मेरी ओर से न चाहते हुए भी लेख-अचयन, लेख-चयन में विलम्ब, पत्र-व्यवहार आदि विभिन्न कारणों से लेखकों एवं पाठकों के हृदय को ठेस पहुँची हो तो निर्मल हृदय से करबद्ध क्षमायाचना करता हूँ। आशा है आपका सकारात्मक सहयोग निरन्तर प्राप्त होता रहेगा।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक, जिनवाणी

क्रमशः (4)

समत्व की साधना : सामायिक

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

महावीर की सामायिक

राजघराने में पैदा होने वाले, भव्य भवनों में देवतुल्य वस्तुओं का उपभोग करने वाले महावीर ने ३० वर्ष की भरपूर जवानी में निकलकर जंगल में दूर-दूर भटकना मंजूर किया। इससे उनके मन में कोई परेशानी नहीं हुई। चिंता नहीं हुई। सुबह, शाम शरीर पर चन्दन का लेप लगाने वाले, फूलों की शय्या पर सोने वाले, कभी रात्रि में यक्ष के देवालय में ध्यान में खड़े रहे, तो कभी सूने मकान में ध्यान करके खड़े रहे। आने-जाने वाले उनको सता रहे हैं, कभी-कभी कंकर-पत्थर उन पर फैंक रहे हैं, कभी चोर समझकर पकड़ रहे हैं, किसी ने उन पर चाबुक का प्रहार भी किया, डण्डों का प्रहार भी किया, लेकिन महावीर के मन में तिल-तुष मात्र भी व्यथा नहीं हुई, खेद नहीं हुआ, रंज नहीं आया। महावीर की सामायिक कौनसी थी और आपकी कौनसी है? एक बात में फर्क आप बता सकते हैं कि उनकी सामायिक तीन करण तीन योग से थी और आपकी सामायिक दो करण तीन योग से है, लेकिन सामायिक का लक्ष्य एक ही है। भाव, रूप, गन्ध, स्पर्श आदि पर कंट्रोल रखो, मन को चिंतित मत होने दो, यह लक्ष्य महावीर का था और यही लक्ष्य हमारा भी है। हम आज की सामायिक में सफलता क्यों नहीं पाते? इसका कारण यह है कि अभ्यास की भूमिका सही नहीं है।

महावीर स्वामी ने साढ़े बारह वर्ष पर्यन्त उग्र तपश्चर्या करके वीतराग दशा प्राप्त की और सामायिक का साक्षात्कार किया । उन्होंने संसार को यह संदेश दिया कि यदि शान्ति, स्थिरता और विमलता प्राप्त करनी है तो सामायिक की साधना करो।

सामायिक में समता के उपाय

1. ममत्व त्याग– सामायिक करते समय तुम्हारा मन बाहर चला जाय तो यह समझो कि जिस चीज पर मन गया है वह भौतिक चीज मेरी नहीं है, उसमें ममता मत रखो। भगवान ने जब जिज्ञासु शिष्य की यह शिकायत सुनी कि भगवन्! मैं समता की दृष्टि से साधना करता हूँ, लेकिन मेरा मन अपनी मर्यादा से बाहर चला जाता है। इसलिए क्या उपाय है, क्या साधन है और किस तरह का प्रयत्न होना चाहिये, जिससे मेरी साधना मन पूर्वक होती रहे, भान पूर्वक होती रहे और चित्त में मलिनता नहीं आवे। तो भगवान् ने कहा-

संसार में दुःख के निमित्त अधिक हैं और शान्ति के निमित्त कम हैं, लेकिन वे दुःख के निमित्त बाहर से नहीं आये हैं। अपने मन से उत्पन्न हुये हैं, फिर भी बाहरी निमित्त मानव मन को चक्कर में डाले, उलझन में डाले तो मानव मन संक्लेश में फंस जाता है, दुःखी हो जाता है, कष्ट में हो जाता है। इसलिए इस राग (ममत्व) को घटाने के लिये दो तरह से उपाय करना चाहिये। जैसे दवाई भीतर पेट में ली जाती है और ऊपर से मालिश की जाती है उसी तरह से भीतरी उपाय राग को घटाने का है और बाहरी उपाय आतापना लेने का है।

मन के बाहर जाने का सबसे बड़ा कारण राग है इसलिए उसको कम करो। राग कम करने का उपाय यह है कि बाहरी पदार्थों के साथ जो तुम्हारा अपनापन है, लगाव है, उसको अपना समझना छोड़ दो। यह समझ लो कि जो मेरा है वह मेरे पास है। जो दुनिया में है, बाहर है, वह मेरा नहीं है।

2. सुकुमारता त्याग– दूसरा बाहरी उपाय यह बताया कि सुकुमारता-कोमलता का परित्याग करो, शरीर की आतापना बढ़ाओ ताकि दुःख सहन करने का अभ्यास कर सको। अभ्यास रहेगा तो आपत्तियों का तथा कठिनाइयों का कभी मुकाबला करना पड़े तो मन में खेद नहीं होगा। जैसी भी परिस्थिति हो उसमें उपलब्ध साधनों में अपने आपको प्रसन्नता के साथ रखने का अभ्यास किया जाये। नर्म-गर्म आसन मिले तो, कभी खरखर मिले तो, कभी मलमल जैसा नर्म कपड़ा ओढ़ने को मिले तो, कभी गर्मी के मौसम में खेस मिल गया तो? यदि मन सधा हुआ है तो आप जैसा मिला उसमें संतोष करोगे तो राग-द्वेष नहीं होगा, मन चंचल नहीं होगा। इसलिए मन की चंचलता को रोकने के लिए सुकुमारता-त्याग का अभ्यास होना आवश्यक है।

3. कामना–त्याग– 'कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।' प्रभु ने कहा कि "ए साधक! यदि मन को बाहर जाने से रोकना चाहता है तो अपनी कामना का त्याग कर, कामना को वश में कर।" जितनी-जितनी इच्छाएँ बढ़ेंगी उतना ही ज्यादा दुःख भोगना पड़ेगा। इच्छाएँ बढ़ाई, तो मन साधना से बाहर जायेगा। अतः प्रभु ने कहा कि दुःख दूर करने की कुंजी है- कामना दूर करना। बन्ध के हेतुओं को काटने के लिए एक ही चाबी को दो तरह से घुमाना है। यदि उस चाबी को जरा टेढ़ा घुमाया तो बन्धन खुल जायेगा। ताला खोलने के लिये वही चाबी है और बन्द करने के लिये भी वही चाबी है। एक छोटा सा उदाहरण है 'समता'। इसका उल्टा करें तो 'तामस' बन जाता है। 'तामस' बन्ध का हेतु है। उसको यदि सुलटा कर दो तो 'समता' हो जायेगा।

4. विकथा–त्याग– सामायिक जैसी साधना को निर्मल और निर्दोष बनाकर आगे बढ़ाना है तो उसके लिये प्रभु ने कहा कि विकथा का वर्जन करके चलो, क्योंकि जो आध्यात्मिक मार्ग की ओर आगे बढ़ाने की बजाय आध्यात्मिक मार्ग से पीछे मोड़ती है उस कथा का नाम विकथा है। मानव निरन्तर ऐसी कथाएँ सुनता रहता है जो राग बढ़ाने वाली हैं, भोग बढ़ाने वाली हैं, क्रोध बढ़ाने वाली हैं। परिणामस्वरूप उसके मन में राग-द्वेष की वृद्धि होती है। इसलिये प्रभु ने कहा कि जो आत्मभाव की ओर ले जाने वाली नहीं हैं, आत्मभाव से मोड़ने वाली हैं, ऐसी कथाओं से दूर रहो।

5. लोकैषणा त्याग– आत्मा में जब तक शुद्ध दृष्टि उत्पन्न नहीं होती, शुद्ध आत्मकल्याण की कामना नहीं जागती और मन लौकिक एषणाओं से ऊपर नहीं उठ जाता, तब तक शुद्ध सामायिक की प्राप्ति नहीं होती। अतएव लौकिक कामना से प्रेरित होकर सामायिक का अनुष्ठान न किया जाय, वरन् कर्मबन्ध से बचने के लिए, संवर की प्राप्ति के लिये सामायिक का आराधन करना चाहिये। काम, राग और लोभ के झोंकों से साधना का दीप मंद हो जाता है और कभी- कभी बुझ भी जाता है। अतएव आगमोक्त विधि से उत्कृष्ट प्रेम के साथ सामायिक करनी चाहिये।

सामायिक से लाभ

जो साधक पूर्ण संयम धारण कर तीन करण तीन योग से सामायिक नहीं कर पाता ऐसे गृहस्थ को आत्महितार्थ दो करण तीन योग से आगार सामायिक अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि वह भी विशिष्ट फल की साधक है, जैसाकि निर्युक्ति में कहा है-

सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ,
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा।

अर्थात् सामायिक करने पर श्रावक श्रमण-साधु की तरह होता है। वह अल्पकाल के लिये पापों का त्याग करके भी श्रमण-जीवन के लिये लालायित रहता है। इसलिये गृहस्थ को समय-समय पर सामायिक-साधना करनी चाहिये।

सामायिक करने का एक लाभ यह भी है कि गृहस्थ संसार के विविध प्रपंचों में विषय-कषाय और निद्रा-विकथा आदि में निरंतर पाप संचय करता रहता है। अतः सामायिक के द्वारा घड़ी भर उनसे बचकर आत्म-शान्ति का अनुभव कर सकता है। क्योंकि सामायिक-साधना से आत्मा मध्यस्थ होती है। कहा भी है-

जीवो पमायबहुलो, बहुसो उ वि य बहुविहेसु अत्थेसु।
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा।।

भगवान महावीर के तत्त्वज्ञान का प्रधान साध्य समभाव है। समभाव की साधना पर उन्होंने बहुत बल दिया है। इस साधना की विशेषता यह है कि इससे व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त उच्च, उदार, शान्त और सात्त्विक बनता है, साथ ही समाज में समता और शान्ति आती है। व्यक्तियों का समूह ही समाज है और व्यक्तियों के जीवन में जब सुधार हो जाता है तो समाज स्वतः सुधर जाता है। सामायिक-साधना वह शक्ति है जो व्यक्ति में ही नहीं, समाज और देश में बिजली पैदा कर सकती है। व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन में यह साधना आनी चाहिए, जिससे उसका व्यापक प्रभाव अनुभव किया जा सके।

अगर आप अपने किसी एक पड़ौसी की भावना में परिवर्तन ला देते हैं और उसके जीवन को पवित्रता की ओर प्रेरित करते हैं तो समझ लीजिए कि आपने समाज के एक अंग को सुधार दिया है। प्रत्येक व्यक्ति यदि इसी प्रकार सुधार के कार्य में लग जाय तो समाज का कायापलट होते देर न लगे। (समाप्त)

खिल गई भीतर की चांदनी

श्रीमती विमला जोटा

खिल गई मन के भीतर की चांदनी तो
तन की धरा स्वयं चमक जायेगी-२
खिल गया गर गुल चमन में तो
बहारें चहुं ओर स्वयं ही छा जायेगी-२

मन सुन्दर तो तन सुन्दर, तन सुन्दर तो मन सुन्दर
कड़ी से कड़ी स्वयं जुड़ जायेगी,
दूर होंगे गर भीतर के दोष तो।
आत्म शुद्धि स्वयं ही हो जायेगी-२।।

मानव ठहरो! झांको भीतर, पहचानो अपने आपको,
जीवन में क्या खोया, क्या पाया, यह स्वयं ही जांच लो।
स्वयं से स्वयं की खोज करोगे तो
जीवन की दिशा स्वयं ही बदल जायेगी-२।।

चलते रहो, बढ़ते रहो, सफल प्रयास करते रहो,
जीने का लक्ष्य क्या है, चिंतन मन में करते रहो।
मिट गया भीतर का अंधकार तो,
बाहर रोशनी स्वयं छा जायेगी।।३।।

-जे १, पामस्प्रिंग, कफ परेड़, मुम्बई-४००००५(महा.)

कषाय-विजय का करें जतन

उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.

धर्माराधन का वास्तविक लक्ष्य आत्म-निर्मलता है। आत्म- निर्मलता तभी आ सकती है जब क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय पर नियन्त्रण कर विजय प्राप्त की जा सके। उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने 28 जुलाई 2003 को जोधपुर में फरमाये प्रस्तुत प्रवचन में सहज ग्राह्य रीति से सरल शब्दों में कषाय-विजय की महती प्रेरणा की है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता ने किया है। *-सम्पादक*

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

चातुर्मास का मंगलमय समय आत्मजागृति का संदेश लेकर हमारे सामने उपस्थित है। इस चातुर्मास में ऐसी साधना करें जिससे कि विकारों पर विजय प्राप्त की जा सके। व्याख्यान सुन लेना, शास्त्र सुन लेना, दोपहर में चौपाई सुन लेना, शाम को प्रतिक्रमण कर लेना तभी सार्थक है जबकि जीवन में बदलाव आये। जीवन जैसा पहले था वैसा ही आज है तो कहना चाहिये कि यह तो रीति-रिवाज के नाम पर की गई क्रिया है। ये सब क्रियाएँ कर लीं, किन्तु साधना के नाम पर कुछ बना नहीं। चातुर्मास के पन्द्रह दिन निकल गये, क्या आपने इस पर कुछ सोचा है? चातुर्मास के लिए क्या कहूँ, जीवन के किसी के पचास वर्ष, किसी के साठ वर्ष, किसी के सत्तर-बहत्तर वर्ष निकल गये। प्रतिवर्ष चातुर्मास आता है, पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आते हैं, संवत्सरी भी आती है, क्षमायाचना भी करते हैं, सब कुछ करते हुए भी **क्या कारण है कि अभी तक वही क्रोध, वही मान, वही माया, वही लोभ, वही राग, वही द्वेष, वही ईर्ष्या, वही मत्सर, वही विकार जीवन में भरे हैं। ये विकार इस जन्म में नहीं, तो फिर किस जन्म में मिटेंगे?**

मानव जीवन में इतनी योग्यता प्राप्त करके विकार नहीं मिटा पाये तो कौनसी गति, कौनसी योनि, कौनसा दण्डक है, जहाँ जाकर यह जीव कुछ अपने विषय में, आत्मा के विषय में, परमात्मा के विषय में, आत्मिक गुणों के विषय में, कर्मों के विषय में, विकारी अवस्था के विषय में सोचेगा? कब विभाव से हटकर स्वभाव में आने का प्रयत्न करेगा? देखा-सुना जा रहा है विकारी अवस्था आपके जीवन पर ज्यादा हावी हो रही है। आज आप संतों की वाणी सुनते हैं, जिनवाणी का पान करते

हैं, धर्म-ध्यान भी करते हैं। फिर भी जीवन में परिवर्तन नहीं दिखता।

आज प्रचार-प्रसार के साधनों की कोई कमी नहीं है। पहले प्रचार-प्रसार के साधन कम थे। व्याख्यान भी कम थे। पुस्तकें भी कम थीं। स्थानक भी कम थे। स्थानक थे भी तो कच्चे थे। आज स्थानक पक्के हैं, श्रावक कच्चे। आज साधनों की कमी नहीं है। शिविर जगह-जगह लगते हैं, प्रश्नोत्तर कार्यक्रम हो रहे हैं, परीक्षाएँ भी हो रही हैं। सभी तरह से साधन बढ़ रहे हैं, फिर भी कहना होगा कि साधना नहीं बढ़ रही है। साधन बढ़ने के साथ साधना बढ़नी चाहिये, लेकिन साधना बढ़ने के बजाय घट रही है। इसका मतलब है या तो साध्य को समझा नहीं है या साधनों को साध्य मान लिया है।

एक बच्चे से पूछा- सामायिक कहाँ है- तो बच्चे ने कहा सामायिक बैठके में है। कई हैं, जो मुँहपत्ती को ही सामायिक समझ लेते हैं। स्वाध्याय के लिए पूछा जाय कि स्वाध्याय कहाँ है तो जवाब मिलता है पुस्तक में। यही बात है, कई ऐसे व्यक्ति हैं जो साधन को साध्य समझ रहे हैं।

साधन भी धर्म है, साध्य भी धर्म मान लिया है। इसे इस रूप में समझें। एक रेलगाड़ी है। रेलगाड़ी साधन है किसी स्थान विशेष पर पहुँचने के लिए। व्यक्ति रेल को गन्तव्य स्थान समझ ले तो....? जिस लक्ष्य को लेकर साधना की जानी चाहिए उस तरफ ध्यान कम है। रूढ़ि चल रही है, रीति-रिवाज के नाम पर सब कुछ हो रहा है, पर जीवन में परिवर्तन के नाम पर कुछ नहीं हो रहा। आज द्रव्य को लेकर उलझ रहे हैं। जितना त्याग द्रव्य-हिंसा को लेकर किया जाता है, भाव हिंसा की तरफ ध्यान तक नहीं। मकान की सफाई करते-करते कभी चिड़ी के बच्चे पर पैर पड़ गया, कभी चूहे के बच्चे की हत्या हो गई तो बहिन आकर कहेगी- "बाबजी! म्हारे हाथ सुं मोटो पाप हो गयो। आज पंचेन्द्रिय जीव की हत्या हो गई, इसलिए आप प्रायश्चित दिरावो।" बाई के मन में प्रायश्चित की लगन रहती है। अनुकम्पा की दृष्टि से यह बात अच्छी है। प्राणिमात्र पर अनुकम्पा का भाव रहना ही चाहिये। परन्तु द्रव्य हिंसा को लेकर व्यक्ति जितना विचार करता है उतना भावहिंसा का कभी विचार नहीं करता। भावहिंसा के लिए प्रायश्चित्त हेतु शायद कभी किसी का ध्यान तक नहीं जाता। मुझे आज क्रोध आ गया है इसलिए आप प्रायश्चित फरमाओ, ऐसा कहने वाला व्यक्ति नहीं आता। मैंने

मायाचार कर लिया, मैंने लोभ कर लिया, मैंने मान कर लिया यह कहकर प्रायश्चित्त लेने कौन आता है? भाव हिंसा से मन में छटपटाहट होती है। किन्तु बहुत से हैं जो इसे पाप रूप में समझते ही नहीं। वे पहले पाप को पाप तो समझें। **द्रव्य हिंसा के जितने प्रगाढ़ संस्कार जीवन में रहे हुए हैं उतने भाव हिंसा के नहीं हैं।** अट्ठारह पापों में से पहला पाप नजर में आता है। किसी के शरीर पर मक्खी बैठी है और कोई कहे-मक्खी को मार दो तो? कोई यह कहे मैं पचास रुपये देता हूँ, मक्खी मार दो। (सभा में से- पचास रुपये क्या लाख रुपये भी दो तो मक्खी नहीं मारी जावे) द्रव्य हिंसा से इतना डर लगता है तो क्या झूठ बोलने में भी इतना ही डर लगता है? चोरी करने में? परिग्रह को तो पाप समझते हैं?

जितना-जितना परिग्रह बढ़ता है उतनी-उतनी ममता बढ़ती है, मोह बढ़ता है। किसी का परिग्रह बढ़ता है तो वह कहता है यह तो मेरी पुण्यवानी खिल रही है। जो कुछ भी मिल रहा है उसका कारण पुण्यवानी है। **आप परिग्रह को पापरूप समझते नहीं, उलटे मूर्च्छा-ममत्व से खुश होते हैं। मान का भी यही हाल है। मान कषाय रूप में लक्षित होता ही नहीं।** क्रोध तो फिर भी बाहर दिखता है, लेकिन मान दिखता नहीं। मान स्वयं नहीं दिखता, फिर भी लोग मानपत्रों को मंडाकर रखते हैं। जो क्रोधको प्रज्वलित करने वाला है वह 'मान' कषाय रूप समझा ही नहीं जाता। मान नहीं हो तो क्रोध नहीं आता और क्रोध आ भी जाय तो ज्यादा ठहरता नहीं। क्रोध तभी उत्तेजित होता है जब मन में मान होता है। अग्नि को पवन नहीं मिले तो वह ज्यादा प्रज्वलित नहीं होती। क्रोध के लिए मान पवन है। मान है इसीलिए तो वह कहता है मुझे क्या समझ रखा है, मेरे पीछे बल है। मेरे पीछे परिवार का बल है, धन का बल है, सत्ता का बल है, बुद्धि का बल है, शरीर का बल है। कितने-कितने बलों को लेकर आदमी घूम रहा है। भगवान ने आठ प्रकार के मद कहे हैं। आपके तो और भी ज्यादा हैं। किसी को पुत्र की योग्यता का मान है तो कइयों को पति की योग्यता का। कोई कहता है मेरा बेटा वकील है, जज है, डाक्टर है आदि।

एक माँ सा आए। आगे बढ़े एवं दूसरी बहिनों से बोले- "थें लारे (पीछे) सिरको। मने जाणो हो के नहीं। म्हारे दो बेटा वकील है। मैं उणारी माँ हूँ।" माँ सा खुद कांई नहीं जाणे। यही बात है। आज हर

व्यक्ति अहं को लेकर घूम रहा है। अहं को लेकर जहाँ गृहस्थ घूम रहे हैं तो त्यागियों में भी अहं का रोग है।

कोई पागल मचल रहा है, मनचाहे भोगों को पाकर,
कोई पागल उछल रहा है, भोग त्याग का नाच दिखाकर।
दोनों ही केन्द्रों में केवल, अहं हृदय का बोल रहा,
कैसा भी है अहं अहं है, जीवन में विष घोल रहा।।

कवि ने कहा- कोई पागल मचल रहा है मनचाहे भोगों को पाकर। जो इच्छा थी, पूरी हो गई। समझ लीजिये एक चक्रवर्ती है। उसके सामने आपके भोग कहाँ? एक वासुदेव है उसकी ऋद्धि के सामने आपकी क्या ऋद्धि? बलदेव के सामने आपका क्या बल? जरा विचार तो करें उनके सामने क्या हैं आप? फिर भी जो कुछ अनुकूलता मिली, सामग्री मिली, उसको लेकर मचल रहे हैं। कोई पागल उछल रहा है, भोग-त्याग का नाच दिखाकर । त्यागी बन गया, तो भी कहेगा- "हम ऐरे गेरे नत्थु खेरे नहीं थे, हम भी सम्पन्न थे। माता-पिता, भाई-बहिन, भतीजा-भतीजे सब सगे संबंधी थे।" वह त्याग करके भी मन में उनको लिए घूमता है। वस्तु का त्याग कर दिया, लेकिन अहं का त्याग नहीं हुआ। वस्तुओं का त्याग तो हुआ, वैराग्य नहीं हुआ। **त्यागी, वैरागी और वीतरागी तीन शब्द हैं। त्याग में वस्तु छूटती है, वैराग्य में ममत्व टूटता है और वीतरागता में आनन्द फूटता है।** त्याग में वस्तु छूटती है, वैराग्य में वस्तु के प्रति रहा ममत्व भाव भी छूटता है, जबकि वीतरागता में आनन्द ही आनन्द है। कहा भी है एकान्त सुखी मुनि वीतरागी।

नवि सुही देवता देवलोए,
नवि सुही पुढवीपइराया।
नवि सुही सेट्ठि सेणावई,
एगंत सुही मुणी वीयरागी।।

कहते हैं- देवलोक में रहने वाले देवता भी एकान्त सुखी नहीं हैं। वैमानिक देवलोक में रहने वाला देव भी सुखी नहीं है। हेमचन्द्राचार्य ने त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में चार गतियों के देवों का वर्णन किया। देवगति में भी दुःख है। देवताओं से देवियों की आयु कम होती है, यह भी दुःख है। देवी के चले जाने पर हाय देवी! तूं कहा गई, इस प्रकार देव विलाप करते हैं, क्रन्दन करते हैं, चिल्लाते हैं। देव भी वियोगजन्य दुःख भोगते हैं। कभी लोभ-कषाय के कारण एक-दूसरे के रत्न चुरा लेते

हैं। कभी शिकायत होती है तो इन्द्र वज्र का प्रहार करता है। उस प्रहार से देव छः माह त्राहि-त्राहि करता रहता है। आयुष्य है इसलिए मरण तो नहीं होता, परन्तु दुःख भोगता रहता है। कभी काम-वासना के वशीभूत होकर देव एक-दूसरे की देवियों को लेकर भाग जाते हैं और जाकर छिप जाते हैं। तमस्काय जहाँ अंधकार ही अंधकार है, जब मालूम होता है, शिकायत होती है तो इन्द्र बुलाकर दण्ड देता है। देवताओं के अन्तिम समय में छः महीने शेष रहते हैं तो वे परभव का बोध कर लेते हैं। छः महीने पहले पहनी हुई माला मुरझा जाती है, गहनों की चमक कम हो जाती है, ममता-मूर्च्छा-मोह को लेकर देव पछताता रहता है कि मेरा यह सिंहासन, रत्न, देवियां, साहिबी छूट जायेगी, इसको लेकर दुःखी होते हैं। परस्पर में कषाय के कारण वे लड़ते-झगड़ते भी रहते हैं।

देवलोक में देव दुःखी हैं तो पृथ्वीपति राजा छः खण्ड का अधिपति चक्रवर्ती भी सुखी नहीं है। श्रेष्ठी-सेनापति भी सुखी नहीं है। फिर सुखी कौन? तो कहा जैन संत एकान्त सुखी हैं। वीतरागी मुनि सुखी है, लेकिन राग-द्वेष में रमण करने वाला मुनि भी सुखी नहीं है। ये मेरे गांव के हैं, ये मेरे चेले-चेलिया हैं। मेरे इतने लखपति श्रावक हैं। मेरे ऐसे-ऐसे भक्त हैं जो मोटरों में घूमते रहते हैं। वे क्या सेवा करते हैं, पूछो मत। राग-द्वेष के कारण ऐसे मुनि भी सुखी नहीं हैं। भक्त क्या सेवा करते हैं? क्या वे आहार-पानी लाकर देते हैं? कपड़े धोते हैं? पगचम्पी करते हैं? वजन उठाकर चलते हैं?

दीक्षा लेकर (मैंने) पहला चातुर्मास पीपाड़ किया। हीरामुनिजी की दीक्षा हुई। शाम के समय हम दोनों आचार्य भगवन्त के साथ जा रहे थे। उधर से राईकाणी (एक महिला) ने देखा और बोली- "देखो, देखो मोटियार हैं, मांग खावण ने निकल गया। खेत में मजदूरी जावे तो पाँच रुपया मिले।" उस समय पाँच रुपये की बड़ी कीमत थी। चालीस वर्ष पहले पाँच रुपये बहुत होते थे। आचार्य भगवन्त ने पूछा- "वा कांई केवे?" बात बताई तो कहने लगे जिसमें जितनी बुद्धि है वह उतनी ही बात करेगा। त्याग और त्यागी के प्रति बहुमान कैसे करना, हर आदमी इसे नहीं जानता। अन्यथा त्याग और त्यागियों की बहुत बड़ी महत्ता है। संसार का सबसे सम्पन्न चक्रवर्ती भी संत-मुनिराज के चरणों में वन्दन-नमन करता है। इसका मतलब है चक्रवर्ती की ऋद्धि से भी मुनिराज की अन्तरलब्धि बड़ी है, वह ज्यादा सम्पन्न है। चक्रवर्ती भी

बाह्य ऋद्धि का त्याग करता है। वह यदि ऋद्धि का त्याग नहीं करता तो दुर्गति का अधिकारी बनता है।

कहने का आशय यही है कि संसार में एकान्त सुखी कोई है तो वीतरागी मुनिराज हैं। यहाँ ध्यान रखने की बात है मुनिराज भी कैसे? तो कहा- वीतरागी मुनिराज। इसका मतलब है- घर-बार की ममता-त्यागना पर्याप्त नहीं। एक घर की ममता का त्याग करके हजार घर की ममता लेकर घूमने वाला सुखी नहीं हो सकता। हाँ, कर्त्तव्यपरायणता से व्यवहार रखना एक बात है और ममता से व्यवहार रखना दूसरी बात है।

आचार्य भगवन्त(पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) यही करते थे। बाहर से सब कुछ करते हुए भी अन्तरंग से अलग रहते थे। आचार्य भगवन्त प्रपंच में कभी रहे ही नहीं। भद्रिक मुनि ने प्रेरणा करके धार्मिक पाठशाला शुरू की। अब मुनिजी बराबर पृच्छा करते कि लड़के आते हैं या नहीं, मास्टर आता है या नहीं, इनाम बांटा जा रहा है या नहीं। आचार्य भगवन्त उनसे कहने लगे-भाई तुम पाठशाला को लेकर क्यों घूम रहे हो? आज क्षेत्र को लेकर संत घूमते हैं। **कई सन्त श्रावकों को लेकर घूमते रहते हैं। वे श्रावक मेरे, वह क्षेत्र मेरा। संघ को लेकर, समाज को लेकर, क्षेत्र को लेकर, श्रावक-श्राविकाओं को लेकर जो भी घूमते हैं वे बोझा ढ़ो रहे हैं, उससे साधना आगे नहीं बढ़ती।** हाँ कर्त्तव्य के नाते प्रेरणा करना और बात है। एक बार प्रेरणा कर दी, फिर आगे का काम श्रावकों का है।

आचार्य भगवन्त ने कितने-कितने कष्ट उठा कर कैसे-कैसे क्षेत्र खोले और उन क्षेत्रों में धर्म का प्रचार-प्रसार किया। बाड़मेर क्षेत्र जहाँ कोई संत नहीं जाना चाहते थे, आचार्य भगवन्त गये। क्षेत्र को तैयार किया। फिर तो दूसरे-दूसरे कहने लगे कि यह तो हमारा क्षेत्र है। हमारे बडेरे यहाँ विचरते थे। आचार्य भगवन्त कहते- तुम्हारा क्षेत्र है तो तुम संभालो। पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र में कोई जाने को तैयार नहीं होता था। कभी कोई कहता भी तो जवाब मिलता- म्हाने मरणो है कांई? उस क्षेत्र में मिर्ची खाने का प्रचलन ज्यादा है, इस कारण कोई जाना नहीं चाहता था, लेकिन वि.सं. २०२४ में जयपुर चातुर्मास पश्चात् भगवन्त की दृष्टि उस क्षेत्र की ओर गई। माधव मुनि का वह क्षेत्र (पल्लीवाल क्षेत्र) सूख रहा था। उस क्षेत्र में कोई मूर्तिपूजक बन रहा था तो कोई इधर-उधर

हो रहा था, उस क्षेत्र को संभालने की जरूरत लगी। माधवमुनि जी स्थानकवासी परम्परा के प्रभावशाली संत थे। मूर्ति भगवान नहीं है, इसका वे खुला उपदेश देते थे। उन्होंने पल्लीवाल क्षेत्र को पक्का किया। उनके बाद उस क्षेत्र में आचार्य भगवन्त ने पधारकर प्रेरणा की और क्षेत्र का रक्षण ही नहीं, लोगों को धर्म में स्थापित किया। आचार्य भगवन्त ने २०३१ में सवाईमाधोपुर चातुर्मास किया। उस समय श्रावकों के लिए बैठने की जगह नहीं थी। बस स्टैण्ड पर बंसल भवन में चातुर्मास किया। बरामदे में विराज कर भगवन्त प्रवचन फरमाते और सामने के मैदान में श्रावक-श्राविकाएँ बैठकर प्रवचन सुनते। वर्षा होती तो प्रवचन नहीं हो पाता था। श्रावकों ने उसके बाद अपने लिए छप्परों की व्यवस्था की। छप्पर से ऊपर का पानी तो रुक गया, लेकिन जमीन का पानी और बहाव नहीं रुका तो बैंचों पर बैठकर व्याख्यान सुना। पुराने संतों ने जो कष्ट उठाये, आज के संतों को प्रेरणा लेनी चाहिए। पहले कैसी-कैसी जगहों पर रहना पड़ता। नारेलों के भखार में पाली में विराजे। बाजार में व्याख्यान होता तो चौंतरे पर संत विराजते। यतियों के उपासरों में ठहरने का और चातुर्मास का काम पड़ता। पुराने संतों ने कष्ट उठाकर क्षेत्र खोले हैं।

आचार्य श्री जयमल जी महाराज बीकानेर के बाहर बनी छतरियों में विराजे। सात-सात दिन तक आटा घोल कर पिया। वहाँ यतियों का बड़ा जोर था। शहर में प्रवेश नहीं कर सकते थे। जोधपुर के दीवान की लड़की रामप्यारी बाई ने आचार्यश्री को बीकानेर पधारने की विनति की। आचार्य श्री ने भी सोचा, बाई विनति कर रही है, तो चलें वहाँ धर्म का प्रचार होगा। बीकानेर तो पहुँच गये, लेकिन यतियों के जोर के कारण शहर में प्रवेश नहीं कर सके। आचार्य श्री ने बीकानेर पहुंचने पर भी समाचार नहीं करवाये और न ही कहा कि हम यहाँ आ गये हैं, कोई सामने नहीं आया। एक दिन रामप्यारी बाई रथ में बैठकर उधर से जा रही थी। रथ में बैठी दासियों ने कहा- आपके महाराज बैठे हैं। रामप्यारी बाई ने पर्दा उठाकर देखा तो मालूम पड़ा कि छतरी में आचार्य श्री विराज रहे हैं। वह उतरी, जाकर वन्दन-नमस्कार किया। भगवन्! आप शहर में पधारो। आचार्यश्री ने कहा- यहाँ यतियों का जोर है, इसलिए शहर में नहीं आ सकते। वे तो मारने के लिए तैयार हैं। रामप्यारी बाई ने मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक

गुरु महाराज को आहार-पानी नहीं बहरा दूँ, मैं अन्न-जल का त्याग रखूँगी।

दर्शन-वन्दन कर वह घर लौट आई। रामप्यारी बाई के दो लड़के बीकानेर में दीवान थे। लड़के भोजन करने घर आए और माँ से बोले-माताजी अब भोजन करते हैं। माँ ने कहा- जब तक गुरु महाराज को आहार-पानी नहीं बहराऊँ, मैं भोजन नहीं कर सकती। गुरु महाराज को ले जाकर आहार-पानी नहीं बहरा सकती, वे शहर में पधारें तो ही यह लाभ मिल सकता है। दोनों लड़कों ने दरबार से कहा। दरबार ने फरमान निकाल दिया कि संतों को शहर में आने दो। इस तरह संतों ने उस क्षेत्र को खोला। क्षेत्र खोलने में कितनी कठिनाई आई। आज कोई कुछ भी कहे कि यह क्षेत्र मेरा है, लेकिन बीकानेर क्षेत्र आचार्य श्री जयमल जी महाराज ने खोला।

आचार्य भगवन्त ने जो क्षेत्र खोले वहाँ पर जाकर संभालना कठिन हो रहा है। भगवन्त आगे होकर कठिनाइयों के सामने जाते। वे तो सदा यही कहते कि गुरु महाराज का मेरे पर ऋण है, उससे उऋण होने के लिए मुझे सभी क्षेत्रों में जाना है। गुरुदेव ने अलग-अलग क्षेत्रों में विचरण-विहार करके सामायिक-स्वाध्याय का बिगुल बजाया। आचार्य भगवन्त का जीवन-निर्माण करने वाले पूज्यपाद आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज का कल पुण्य दिवस है। कल की हरियाली अमावस्या पर आप धर्म-ध्यान का लक्ष्य रखकर पचरंगी कर रहे हैं। हम उनके बतलाये मार्ग पर एक संगठन में चलें। हमारी परम्परा में एक आचार्य की नेश्राय का सिलसिला बराबर चल रहा है, श्रावकों का भी इसमें बराबर सहयोग है।

आज बाह्य भक्ति विशेष बढ़ गई है, अन्तर भक्ति में कुछ कचावट आई है, उसे पुनः मजबूत करके परम्परा के आदर्श को आगे बढ़ायें। आप सामायिक-स्वाध्याय करते हैं। जो प्रतिदिन नहीं कर सकते, वे सप्ताह में एक दिन तो करें। **धर्म तुरन्त फल देने वाला है। धर्म से देवलोक मिले या नहीं, पर आत्म-शांति तो मिलती है। आपका लक्ष्य कषाय-मुक्ति का रहे तो विकारी अवस्था समाप्त हो सकती है।** हर व्यक्ति समता भाव के साथ अपनी आत्मा के तुल्य सब प्राणियों को समझे तो मैं समझता हूँ आप भगवान महावीर के संदेश को आत्मसात् कर सकेंगे। बूंदी वाले प्रेमचन्द जी कोठारी चार सूत्र कहते हैं- १.

सिद्धान्त से समझौता नहीं २. व्यवहार में कठोरता नहीं ३. आचरण में शिथिलता नहीं और ४. जीवन में प्रमत्तता नहीं। वे ये सूत्र बताते रहते हैं। बून्दी जाने पर संतों को यह सूत्र बताया। यहाँ सम्पतराज जी डोसी कषाय-विजय की बात कहते रहते हैं। आज इसकी जरूरत है। बत्तीस शास्त्र कौन पढ़ेगा? किसको समय है? अगर कषाय-विजय को लेकर साधना का क्रम शुरू किया जाय तो जीवन में परिवर्तन आयेगा ही। आप शाम को बैठकर पन्द्रह मिनट चिन्तन करें और देखें कि आज मेरे से कहाँ-कहाँ भूल रही है। आप अपने जीवन का निरीक्षण करें और संकल्प करें कि भविष्य में क्रोध कषाय से मैं मुक्त रहूँ। आप चार-छः महीने अभ्यास करेंगे तो पायेंगे कि आपके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। भगवन्त तो कहा करते थे कि किसी किसान के लड़के को सेठ अपने यहाँ रखे और उसे बराबर खुराक दे तो थोड़े समय में उसके चेहरे पर चमक आये बिना नहीं रहेगी। इसी तरह साधना करते- करते जीवन में बदलाव आये बिना भी नहीं रहेगा। साधना करते-करते जीवन में निखार आना चाहिये। विकार निकलने चाहिये, चेहरे पर तेजस्विता दिखनी चाहिये।

आप कषायों को हटाने के लिए प्रयास करें। धर्म का रंग चढ़ाने के लिए पहले का रंग हटाना पड़ेगा। रंगरेज रंग चढ़ाता है तो पहले के रंग को साफ करके वस्त्र को सफेद करता है, फिर रंग चढ़ाता है। आप अपने कषाय कम करने का प्रयत्न करें। सब सरल हो जायें यह संभव नहीं। सब सुधरें इसकी गारन्टी नहीं है। आप स्वयं सुधर गये तो एक-एक कर सब सुधर सकते हैं। क्रोध-कषाय के उदय में सबसे पहले मन को, फिर वचन और काया को रोकना पड़ेगा। मन में कभी क्रोध आ भी जाय तो उसे वचन तक नहीं लायें, काया तक तो आना भी नहीं चाहिये। चलते-चलते साइकल वाले ने आपको टक्कर मार दी। आपके मुंह से निकला अंधा है क्या? यह वचन तब निकला जब मन में उसके प्रति वैसे भाव आये। पहले मन में भाव आते हैं, फिर वचन से और उसके बाद काया से क्रोध प्रकट होता है। साइकल से टक्कर लगने पर आपने थप्पड़ भी लगादी तो वह क्रोध वचन के साथ काया में प्रवेश कर गया।

एक सेठ के माथे में किसी ने जूती मार दी, सेठ साहब कुछ नहीं बोले, घर चले गये- जिस व्यक्ति ने जूती से मारते देखा उसने

जाकर सेठजी के पुत्र को बताया- पुत्र ने घर जाकर पिताजी से पूछा कि अमुक आदमी ने आपके माथे पर जूती मारी तो सेठ बोला कि नहीं, नहीं- फिर बोले फलां ने मेरे माथे में जूती मारी, यह या तो मैं जानता हूँ या मारने वाला जानता है या देखने वाला जानता है। अगर मैं उससे लड़ता तो पूरा बाजार जान जाता, बात बढ़ जाती। यह क्रोध कषाय पर नियन्त्रण का एक स्थूल उदाहरण है।

आप कषाय-विजय का अभ्यास चालू कर दीजिये। आपका संकल्प होगा तो निश्चित रूप से आपके जीवन में परिवर्तन आयेगा। आप शांति महसूस करेंगे और आपके जीवन को देखकर दूसरे-दूसरे भी प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

धर्मसभा में ध्यान देने योग्य बातें

श्री चेतन सांखला

1. अनुशासनपूर्वक रहें।
2. पहले आने वाले व्यक्ति बीच-बीच में जगह छोड़कर न बैठें।
3. चलते प्रवचन में जोर से 'मत्थएणं वंदामि' बोलकर व्यवधान पैदा न करें, मौन वंदना करें।
4. प्रवचन के दौरान सामायिक वाले कृपया वस्त्र परिवर्तन कर ही सभा स्थल में आवें।
5. बीच में खड़े होकर न तो गुरुदेव से सामायिक प्रत्याख्यान मांगें और न ही आसपास के लोगों से। मन ही मन भाव वंदन कर स्वयं गुरुदेव की आज्ञा मानकर सामायिक व्रत ले लें।
6. सभा का संचालन करने वाले कार्यक्रम को यथासमय प्रारम्भ करें, ताकि बाद में देरी हो जाने पर मुख्य विषय को गौण न करना पड़े।
7. गीत, भाषण या अन्य औपचारिकताएँ समय की परिधि को ध्यान में रखकर निभायें, ताकि दूर-दूर से आये लोग प्रवचन का पूर्ण लाभ उठा सकें।
8. समारोह ज्यादा देर तक लम्बा न चलायें। दो-तीन घंटे बैठ जाने के बाद लोगों का धैर्य जवाब देने लग जाता है। फिर आपस में बातें, हो-हल्ला या इधर-उधर घूमने का क्रम आरम्भ होने लग जाता है।
9. सभा का संचालन सतर्कता से करें ताकि कभी कोई बात हो तो उसका तुरन्त समाधान कर लेने से ठीक रहता है।
10. वक्तागण समय की मर्यादा का ध्यान रखें। संक्षिप्त में किन्तु सटीक व धैर्यपूर्वक कहीं गई बात ज्यादा असरदार होती है।
11. प्रवचन के दौरान बिल्कुल शांति रखें। व्रत, पच्चक्खाण आदि नियम भी बीच-बीच में न लेकर अंत में ही लेंवे।

-जैपुर झाड़ी (उड़ीसा)

क्रोध है कितना अनर्थकारी?

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

मानव जीवन के अभ्युत्थान एवं मुक्ति में आने वाली बाधाओं में कषाय प्रमुख हैं। कषाय चार हैं- १. क्रोध २. मान ३. माया और ४. लोभ। कषाय में क्रोध सबसे पहले क्रम पर है। क्रोध अर्थात् अशान्ति के ताप में खुद तपना, दूसरों को तपाना, कोपायमान होना।

पहला प्रश्न है क्रोध उत्पन्न क्यों होता है? गुस्से की उत्पत्ति के कारण क्या हैं? स्थानांग सूत्र में क्रोध की उत्पत्ति के चार कारण बताये गये हैं-

"चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ति सिया। तंजहा-
खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च, सरीरं पडुच्च उवहिं पडुच्च।। 4.1.249

अर्थात् १. **क्षेत्र**-नरकादि आश्रित २. **वस्तु-** घर अथवा सचित्त अचित्त मिश्र वस्तु आश्रित ३. **शरीर-** कुरूपादि आश्रित और ४. **उपधि-** उपकरण आश्रित।

चारित्र मोहनीय कर्म के पच्चीस प्रकारों में क्रोध के चार प्रकार इस प्रकार हैं-

१. **अनन्तानुबंधी क्रोध-** ऐसा क्रोध बहुत प्रबल होता है जो संसार में जीव को अनन्त काल तक भ्रमण कराता रहता है।

२. **अप्रत्याख्यानवरणीय क्रोध-** यह क्रोध पहले क्रोध से हल्का होता है। यह इतना तीव्र होता है कि मन में विरति के भाव पैदा नहीं होने देता है।

३. **प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध-** यह दूसरे क्रोध से हल्का होता है। यह देश विरति में बाधक नहीं बनता है, फिर भी सर्वविरति नहीं होने देता। पूर्ण विरक्ति से जीव को दूर रखता है।

४. **संज्वलन क्रोध-** यह क्रोध तीसरे क्रोध से हल्का होता है। सर्वविरति में बाधक नहीं बनता, फिर भी क्षणिक रूप से कभी उत्पन्न होकर आत्मा को थोड़े समय के लिये मलिन कर जाता है।

स्थानांग सूत्र में क्रोध चार प्रकार का दर्ज है-

"चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्तं, तंजहा- आयपइट्ठिए, परपइट्ठिए तदुभयपइट्ठिए, अप्पट्ठिए।। 4.1.249

अर्थात् क्रोध के चार प्रकार है- १. **आत्म प्रतिष्ठित-** अपनी

भूल पर होने वाला २. **पर-प्रतिष्ठित**-दूसरे के निमित्त से होने वाला ३. **तदुभय प्रतिष्ठित**-दोनों के निमित्त से होने वाला। और **अप्रतिष्ठित**-निमित्त के बिना उत्पन्न होने वाला। आधुनिक विचारकों के दृष्टिकोण में क्रोध उत्पत्ति के पाँच कारण हैं- १. दुर्वचन २. स्वार्थ में बाधा ३. अनुचित व्यवहार ४. भ्रम, मतभेद एवं रुचि भेद।

महाकवि माघ के अनुसार क्रोध व्यक्तियों का सबसे पहला शत्रु है।

अंग्रेजी में क्रोध के बारे में कहा गया है-

१. Anger is a bitter enemy of the soul.

क्रोध आत्मा का दुर्भेध्य शत्रु है।

२. Anger is the madness of the mind.

क्रोध मस्तिष्क का पागलपन है।

३. Anger begins in folly and ends in repentence.

क्रोध का प्रारम्भ नादानी में होता है और उसका अन्त होता है पश्चात्ताप में।

४. Anger enters, wisdom departs.

क्रोध का प्रवेश होते ही बुद्धि चली जाती है।

अब क्रोध के परिणाम पर विचार करना है। क्रोध के संबंध में कहा गया है-

"उत्पद्यमानः प्रथमं दहत्येव स्वमाश्रयम्।
क्रोध कृशानुवत्पात्रमन्यं दहति वा न वा।।

जब क्रोध उत्पन्न होता है तो अपने आश्रय स्थान को यानी जिसमें उत्पन्न होता है उसके अंतःकरण को अग्नि की भांति जलाता है। इसके पश्चात् अन्य को जला भी सकता है और नहीं भी जला सकता है। अर्थात् क्रोध करने वालों को अधिक हानि होती है।

स्थानांग सूत्र में कहा गया है कि पर्वत की दरार के समान जीवन में कभी नहीं मिटने वाला उग्र क्रोध आत्मा को नरक गति की ओर ले जाता है-

"पव्वभराइसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे,
कालं करेई णेरइएसु उववज्जंति।।"

प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है-

"कुद्धो सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज।।"

क्रोध में अन्धा हुआ व्यक्ति सत्य, शील और विनय का विनाश कर डालता है।

"इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए, दुक्खं य जाण अदु आगमेस्सं,
पुढो फासाइं या फासे, लोयं च पास निफंदमाणे।।"

–आचारांग सूत्र 4.3.136

क्रोध से मनुष्य की आयु नष्ट हो जाती है और मानसिक दुःख होता है। क्रोधी मनुष्य के पाप कर्म बंधते हैं जिससे नरक में जाता है और वहाँ अनेक प्रकार के दुःखों को भोगना पड़ता है।

दशवैकालिक सूत्र में कहा है–

"कोहो पीइं पणासेइ" –8.38 –सत्येश्वर गीता

क्रोध प्रीति का नाश करता है।

क्रोध का प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। क्रोधावस्था में किया गया भोजन विष के समान प्रभाव दिखाता है। क्रोध के कारण मनुष्य तनावग्रस्त रहता है, भोजन नहीं पचा पाता है, जिससे उदर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

अनुभव बतलाता है कि क्रोध से शरीर का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है और सौम्यभाव समाप्त हो जाता है। क्रोध में मनुष्य की आंखें लाल हो जाती हैं। नथूने फूल जाते हैं और चेहरे का रंग बदल जाता है, चेहरा विकृत हो जाता है, गर्दन की नसें फूल जाती हैं और बहुत से मनुष्यों को क्रोध करने पर चक्कर आने लग जाते हैं। क्रोध से खून जल जाने के कारण शरीर क्षीण होता है, तपस्या नष्ट हो जाती है, योग्यता भस्म हो जाती है। साढ़े नौ घंटे शारीरिक श्रम से जितनी शक्ति क्षीण होती है, उतनी शक्ति पन्द्रह मिनट के क्रोध से क्षीण हो जाती है। बुद्धि अस्थिर एवं मन मलिन हो जाता है। पाचन शक्ति मन्द पड़ जाती है। शरीर में दर्द हो जाता है।

क्रोध से वैर होता है। क्रोध मन का एक ऐसा विकार है जो चिरकाल तक स्थिर रहता है। वैर के कारण बहुत से परिवारों का विनाश हो जाता है।

क्रोध के कारण व्यक्ति अपने माता-पिता, कलत्र (पत्नी), पुत्र, मित्र एवं गुरु का वध भी कर देता है– "कोहंधा निहणन्ति पुत्तं, मित्तं गुरुं कलत्तं च।।"

क्रोध का एक परिणाम यह भी है कि क्रोध करने वाले व्यक्ति का आध्यात्मिक शरीर जल कर भस्म हो जाता है- **"भस्मीभवति रोषेण पुंसां धर्मात्मकं वपुः।।"** पद्म पुराण के अनुसार क्रोध अनर्थ का मूल (कारण) है। संसार (जन्म-जरा-मृत्यु के चक्र की अवधि) को बढ़ाने वाला है।

विचारकों ने क्रोध को एक बड़ा नशा- एक क्षणिक पागलपन बताया है-

क्रोध बड़ा भारी नशा पागलपन है क्रोध।
क्रोधी पा सकता नहीं कर्तव्यों का बोध।।

आंग्ल भाषा में क्रोध के परिणामों के संबंध में कहा गया है-

१. Anger deprives a man's wisdom

क्रोध व्यक्ति को बुद्धिमत्ता से वंचित करता है।

२. An enraged person is as deaf as an ocean and as fierce as fire.

गुस्से में मनुष्य समुद्र की तरह बहरा और आग की तरह भयंकर बन जाता है।

३. Anger extinguishes the lamp of mind.

Anger blows out the lamp of mind.

क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है।

४. An angry man loses his reasoning ability and speaks indiscriminately.

क्रोधी व्यक्ति अपनी तर्कणाशक्ति को खो देता है एवं अण्ट-सण्ट बोलता रहता है।

५. An angry man opens his mouth and shuts his eyes.

क्रोधी मनुष्य अपना मुँह खुला रखता है और अपनी आंखें बन्द रखता है अर्थात् क्रोधी मनुष्य देख नहीं सकता।

इसका तात्पर्य यह है कि क्रोधावस्था में स्वयं क्रोधी को भी यह समझ नहीं रहती कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

क्रोधी कृतघ्न हो जाता है। वह अपने उपकारी के उपकारों को भूल कर उसके प्रति भी दुर्व्यवहार करने लग जाता है। "कृतघ्नता परोपकार रूपी धर्म के मार्ग में रोड़े अटकाती है।" कृतघ्नता से बचना

हो तो हमें क्रोध से बचना चाहिए।

विशेषज्ञों का कहना है कि "क्रोध लवण सागर है और प्रेम क्षीर सागर है। जीवन में जब कभी क्रोध अग्नितत्त्व के रूप में बाहर फूट पड़ता है, उस समय नियन्त्रण नहीं रहता है। हृदय पर मन का क्रोध नदी के वेग की तरह फूट पड़ता है। इस प्रकार भयंकर आग लगती जाती है, फैलती जाती है।" क्रोध से आत्मा स्वयं एवं अन्य को भी जला देता है अर्थात् खुद भी जलता है और अन्य को भी जला डालता है तथा अधोगति को प्राप्त करता है।

क्रोध की आग में वे मनुष्य जलते हैं जिनके मन में क्रोध और प्रतिशोध की भावना हो। ऐसे कई दृष्टान्त हैं कि जो मनुष्य किसी शान्त स्वभावी पर क्रोध करता है तो वह स्वयं तो क्रोधाग्नि में जलता है, मगर दूसरा नहीं जलता। कारण कि दूसरों को जला देना उसके वश की बात नहीं। दूसरों का प्रारब्ध हो, योग हो, तो क्रोधी व्यक्ति के क्रोध भड़कते ही वे जलते दिखाई देंगे, लेकिन दूसरों के प्रारब्ध की भूमिका अभी जलने की नहीं आई हो तो कितना ही भयंकर क्रोध हो, उन्हें भस्म करने की चाहे जितनी योजनाएँ हों उनका बाल भी बांका नहीं होगा। यक्षाविष्ट अर्जुन मालाकार की क्रोधाग्नि में राजगृह के अनेक लोग भस्म हो गये, लेकिन सुदर्शन श्रमणोपासक को उसकी अग्नि भस्म न कर सकी, उसका बाल भी बांका नहीं कर सकी। चण्डकौशिक सर्प के क्रोध ने चाहे कितने ही प्राणियों को लील लिया हो, लेकिन भगवान महावीर पर उसका दाव न चल सका। रावण ने राम को समाप्त करने के लिये अनेक उपाय किये, परन्तु क्रोधाग्नि में रावण स्वयं भस्म हो गया। पाण्डवों को जलाने के लिये कौरवों ने लाक्षामण्डप की योजना बनाई थी, परन्तु पाण्डव लाक्षामण्डप में प्रवेश करके सही सलामत बाहर निकल आए, आग कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी। प्रह्लाद को जलाने के लिये हिरण्यकश्यप ने होलिका को जलती आग में बिठाया ताकि होलिका तो अपने वरदान के कारण जल न सके और प्रह्लाद उसकी आग में भस्म हो जाए, किन्तु हुआ उल्टा ही। होलिका जल उठी और प्रह्लाद का एक रोम भी आग में नहीं जला। वह सुरक्षित रहा। रावण ने राम को समाप्त करने के लिये अनेक उपाय किये, किन्तु आखिर रावण स्वयं ही काल का ग्रास बन गया।

कमठ तापस के क्रोध की आग में दूसरे चाहे जल गये हों,

लेकिन पार्श्वनाथ उसकी क्रोधाग्नि में नहीं जले। इतना ही नहीं जब तापस से पार्श्वनाथ भाई के नाते मिलने गये तब उसने पार्श्वनाथ के झुके हुए मस्तक पर क्रोधवश शिला उठा कर दे मारी, तब भी पार्श्वनाथ ने कमठ तापस के प्रति क्रोध नहीं किया। इसी कारण कमठ के क्रोध के कारण पार्श्वनाथ पर कोई असर नहीं हुआ। उक्त दृष्टान्तों से स्पष्ट है कि जो दूसरों पर अपने क्रोध या दुर्भाव की आग जलाना चाहता है वह स्वतः जल जाता है।

क्रोध अधः पतन का कारण है जैसा कि प्रभु महावीर ने कहा "अहो वयइ कोहेणं"। क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पछतावे पर समाप्त।

अब प्रश्न पैदा होता है कि क्रोध को किस ढंग से शान्त किया जा सकता है? क्रोध के समय या क्रोध का प्रसंग आने पर वाणी पर नियन्त्रण रखा जावे तो सामने वाले का आधा क्रोध तो उसी समय समाप्त हो जाता है। विचारों पर भी नियन्त्रण रखना क्रोध के समय आवश्यक है। विचार, वाणी और व्यवहार तीनों पर नियन्त्रण करने से क्रोध पर झटपट नियन्त्रण हो जाता है।

क्रोध को उपशम के द्वारा नष्ट करना चाहिए। ऐसा भगवान महावीर ने कहा था- "उवसमेण हणे कोहं।" किसी पाश्चात्त्य विचारक ने कहा है कि अपने क्रोध को वश में रखना ही सर्वोच्च शासन है- "The highest government is governing anger"

क्रोध की बीमारी का एक इलाज है- विलम्ब। एक विचारक ने सलाह दी है कि यदि आपको गुस्सा आ जाय तो बोलने से पहिले एक से दस तक गिनती करते रहो और यदि गुस्सा तेज हो तो सौ तक गिनती करते रहो। महात्मा ईसा ने कहा है कि क्रोध में विलम्ब करना विवेक है और शीघ्रता करना मूर्खता। हजरत मुहम्मद पैगम्बर ने गुस्से के लिये विलम्ब का समर्थन अपने ढंग से इस प्रकार किया है कि गुस्सा आ जाय तो खड़े मत रहो, बैठ जाओ; अगर बहुत तेज गुस्सा हो तो लेट जाओ।

'पद्म पुराण' के अनुसार जिसके पास क्रोधाग्नि को बुझाने वाला क्षमारूपी शस्त्र (साधन) है उसकी सदा विजय होती है। शत्रुओं का उदय नहीं होता है। जिसने क्षमा आदि (गुणों) की खड्ग से क्रोध रूपी शत्रु का वध करके उसे गिरा दिया है, वही शूरवीर है, वही बलवान है,

वही विद्वान है, वही तपस्वी है, वही जितेन्द्रिय है। वही इन्द्रियों का विजेता है, संयमी है।

क्रोधी जब क्रोध से भरा हुआ हो तो उसके सामने वाले व्यक्ति को मौन रहना चाहिए और यदि मौन रहना संभव न हो तो उसके सामने से हट जाना चाहिए। गुस्से से गुस्सा बढ़ता है। क्षमा या मौन से वह शान्त हो जाता है। कहा है-

"अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।"

जहाँ घास न हो वहाँ अंगारा गिर जाय तो वह स्वयं धीरे-धीरे बुझ जाता है।

पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि अनर्थों (अनिष्टों) से बचना चाहते हैं तो क्रोध से बचने का प्रयास करना चाहिए, जिससे निर्जरा के द्वारा चारित्र मोहनीय कर्म क्षीण हो सकें।

-पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय
संरक्षक, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
"चन्दन" बी-२ रोड़, पावटा, जोधपुर

जीवन एक गूँज है

एक छोटा बच्चा अपनी माँ से नाराज होकर चिल्लाने लगा, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ। मैं तुमसे नफरता करता हूँ।" पिटने के डर से वह घर से भाग गया। पहाड़ियों के पास जाकर चीखने लगा, "मैं तुमसे नफरत करता हूँ। मैं तुमसे नफरत करता हूँ।" वहाँ पर वही आवाज गूँजने लगी- "मैं तुमसे नफरत करता हूँ। मैं तुमसे नफरत करता हूँ।" यह जिन्दगी में पहली बार था, जब उसने कोई गूंज सुनी। वह डर कर अपनी माँ के पास भागा और बोला। घाटी में एक बुरा बच्चा है जो चिल्लाता है, "मैं तुमसे नफरता करता हूँ, मैं तुमसे नफरत करता हूँ।" उसकी माँ सारी बात समझ गयी। उसने अपने बेटे से कहा कि वह पहाड़ी पर जाकर फिर से चिल्ला कर कहे, "मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।" छोटा बच्चा वहाँ भाग कर गया और चिल्लाया, " मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ" और वहीं आवाज गूंजी। इस घटना से बच्चे को एक सीख मिली-

"हमारा जीवन एक गूंज की तरह है।
हमें वही वापस मिलता है, जो हम देते हैं।"

संकलन- मुदित जैन,
3 के २४, कुड़ी भगतासनी, जोधपुर

मृत्यु से क्या घबराना

डॉ. एस.एस. भाण्डावत

मृत्यु एक पहलू है और जीवन उसका दूसरा पहलू। मृत्यु का अर्थ है एक शरीर से दूसरे शरीर में परिवर्तन। मृत्यु शब्द 'मृ' धातु से बना है जिसका मतलब है प्राणों का विच्छेद। शरीरधारी सांसारिक प्राणियों की मृत्यु प्राकृतिक प्रक्रिया है। नया शरीर धारण करने के लिये पुराने का त्याग किया जाता है।

भारतीय संस्कृति में मरण के लिये जितने शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन सभी के मूल में यही भाव झलकता है कि आत्मा नहीं मरता, शरीर छूटता है।

देहावसान- देह की समाप्ति, आत्मा की नहीं।

दिवंगत- स्वर्ग की ओर आरोहण, शरीर का स्वर्ग जाना संभव नहीं। केवल आत्मा ही वहाँ और उससे पार पहुँच सकती है।

अरथी- शरीर रूपी रथ को आत्मा रूपी रथी संचालित करता है। जिसके रथ का रथी चला गया उसे केवल रथ न कह कर अ-रथी कहना हमारी आत्मदृष्टि का सूचक है।

आत्मा ही सत्य है, देह का नाश सुनिश्चित है। जिसने देह धारण की है, उसका देह वियोग अवश्यंभावी है। शाश्वत व सनातन वही होता है जिसका न तो जन्म होता है न ही मृत्यु। जो इन दोनों से परे है वह आत्मा है।

जैन आम्नाय में प्रतिदिन भावपूर्ण भावना की जाती है कि हे भगवन्! मुझे बोधि की प्राप्ति हो। हे भगवन्! मेरा सुगति में गमन हो, मेरा समाधिपूर्वक मरण हो। मरण क्षण में मेरे चित्त में किसी व्यक्ति का मोह, पदार्थ का लोभ एवं वासना का आकर्षण न हो। मैं मरणभय से निर्भय रहूँ, मन एकमेव तुम्हारे चिंतन में डूबा रहे।

ऐसे महामानवों के लिये मौत महासमाधि बनकर आती है, वे आत्मजयी होते हैं, दिग्विजयी होते हैं, वे नश्वर काया के सुख-दुःख, पाप-पुण्य, कष्ट कठिनाइयों से परे होते हैं। देह व संसार का आकर्षण उन्हें आकर्षित नहीं कर पाता है। वे भली-भांति जानते हैं कि अज्ञानी जिस शरीर को परम सत्य कहता है और जीवन की अमूल्य संपदा को लुटाता रहता है वह शरीर तो कांच के घट के समान है, जो ठोकर में

चूर-चूर होकर बिखर जाता है। २०६ हड्डियों, ७२००० नाड़ियों एवं अरबो-खरबों कोशिकाओं के इस शरीर को मुक्त आत्मा, तिनके के समान उतार फैंकती है।

आत्मा के अंतहीन सौंदर्य में जीने वाला स्वयं को नरभक्षी शेर की पैनी दाढ़ों के बीच पाकर भी भयाक्रांत नहीं होता। वह कहता है- मैं तो अजर-अमर आत्मा हूँ, शरीर का भक्षण हो सकता है, पर आत्मा का नहीं।

आत्मा का अमृतपान करने वाला भला इस कसैली देह से क्या स्वाद लेगा। कसैला स्वाद तो उसे अमृत तुल्य लग सकता है, जिसने अमृत चखा नहीं। इस नश्वर शरीर को अमर मानने वाला ही इसे छोड़ने के समय चीख पुकार करता है। मृत्यु उसे नारकीय पीड़ा के समान लगती है। क्योंकि देह को सजाने, संवारने, इन्द्रियों को तुष्ट-पुष्ट करने के लिये वह विषय-वासना के गर्त में पड़ा कीड़ों सा कुलबुलाता रहता है। ऐसे जीवन को भगवान कृष्ण ने घृणित माना है। वे कहते हैं, जिसका जीवन आत्मविश्वास और सदाचार से सुशोभित होता है, उन यशस्वीजनों को कभी मरण का भय या शोक नहीं सताता।

जिसने कभी असत्य का आचरण नहीं किया हो, जिसके अंदर ईर्ष्या-द्वेष का भाव नहीं हो, जो आत्मा पर परम विश्वासी या आस्तिक हो तथा जो अच्छाइयों पर अनन्य श्रद्धा रखता हो, वही सुखपूर्वक शांतिपूर्वक महामृत्यु का वरण कर सकता है। अतः हम भी सद्चिन्तन, सदाचरण और सद्व्यवहार को जीवन में उतारकर मृत्यु को मांगलिक महोत्सव के रूप में मना सकते हैं।

-अति.महाधिवक्ता, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर

नमस्कार मर्मस्पर्शी

पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजय जी म.सा.

आत्मज्ञान प्राप्त करने का मुख्य साधन विचार है। यह विचार दो रूपों में प्रवर्तित होता है। एक वैराग्य के रूप में व दूसरा मैत्री के रूप में अर्थात् जीवमात्र के प्रति मैत्रीरूप तथा जड़मात्र मात्र के प्रति वैराग्य रूप। नमस्कार दोनों प्रकार के विचारों को प्रेरित करता है। परमार्थरूप आत्मा सत्पुरुषों में होती है। परमेष्ठि-नमस्कार सत्पुरुषों की परमार्थभूत आत्मा को नमस्कार है, इसीलिए परमेष्ठि-नमस्कार समस्त शास्त्रों का मर्मरूप है। शास्त्र तो मार्ग बनाते हैं। उसका मर्म सत्पुरुषों के अन्तर में है तथा परमेष्ठि नमस्कार उस मर्म को छूता है।

-प्रेषक : नवरतनमल डोसी, जूनी धानमण्डी, जोधपुर

सम्प्रदायमुक्त धर्म : एक चिन्तन

श्री पदमचन्द गांधी

जनसंख्या वृद्धि में तीव्र प्रगति करने वाला भारत देश एक अरब के आंकड़े को पार कर चुका है। इनमें से मात्र दो करोड़ से भी कम अर्थात् अधिकतम २ प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व रखने वाले जैन धर्मावलम्बी हैं,जिनके द्वारा अपने आपको अल्पसंख्यक घोषित कराने की मांग उठायी जा रही है, जिनकी सुरक्षा की गुहार कानूनी मदद द्वारा मांगी जा रही है, किन्तु अति अल्प संख्यक रहकर भी जैन अभी तक एक बैनर तले नहीं आये हैं। जैनमत को मानने वाले धर्मप्रेमी दिगम्बर श्वेताम्बर में तो बंटे हुए हैं ही, लेकिन इनके भी अनेक टुकड़े कर दिए गये हैं। अब तो यह स्थिति आ गयी है कि शाखाएँ भी उपशाखाओं में बंट कर बिखरती जा रही हैं। छोटी-छोटी बातों को लेकर विवाद खड़े कर दिए जाते हैं। भगवान महावीर एवं बुद्ध ने कोई सम्प्रदाय तैयार नहीं किया, ढाई हजार वर्ष बाद भी उनका अनुसरण करने वालों में से कोई महावीर या बुद्ध बन गया हो, सुनने में नहीं आया। लेकिन उनकी आड़ में प्रत्येक महापुरुष का सम्प्रदाय खड़ा हो गया।

महापुरुषों का जन्म संसार के दुःखमय वातावरण में मानव की करुणाकांक्षा के लिए होता है। वे अपना अमृत संदेश देने के लिए प्रकट होते हैं। वे साम्प्रदायिक परिधियों का निर्माण नहीं करते। वे तो धर्म के नाम पर प्रचलित जड़ता को, व्यक्ति की अज्ञानता को मिटाने आते हैं। जिस परिधि में आबद्ध होकर धर्म आत्म-संस्कार में सहायक होने की अपेक्षा अन्ध जड़ता में ले जाने लगे, उसका प्रवर्तन वे नहीं करते। किन्तु विडम्बना यह है कि ऐसी दिव्य विभूति के पीछे एक सम्प्रदाय खड़ा हो जाता है और अंततः वह धर्म के अभ्युदय में सबसे बड़ा व्यवधान बन जाता है। आज तक महापुरुषों के पीछे जितने सम्प्रदाय खड़े हुए हैं, उन्होंने ही धर्म को सर्वाधिक हानि पहुंचायी है। साम्प्रदायिक व्यक्ति महापुरुषों के नाम पर इकट्ठे तो हो जाते हैं, उनके भौतिक आवरण का अनुसरण भी करते हैं, लेकिन उनके आध्यात्मिक रूप का आचरण नहीं करते हैं। इससे वे महापुरुषों की तरह तो बन ही नहीं पाते, वरन् जो वे स्वयं हैं उसकी पहचान से भी वंचित हो जाते हैं। स्वयं की पहचान के अभाव में चिड़िचिड़ापन, उत्तेजना एवं तनाव उत्पन्न हो जाता है,

जिससे उनका मन सदैव अशान्त एवं अतृप्त रहता है। महापुरुषों ने फरमाया है कि धर्म स्वयं तक ले जाने वाला यात्रा पथ है, स्वयं तक पहुंचने के बाद वह स्वयं महकने लगता है। व्यक्ति तब महापुरुषों की तरह बन जाता है। बाह्य आचरण के स्थान पर स्वभाव का आचरण हो तो व्यक्ति अन्ध मान्यता के स्थान पर अपने 'अन्तस्' में परिवर्तन करता है, जिससे साम्प्रदायिकता की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

सम्प्रदायों में लिप्त व्यक्ति अपने महापुरुष का मात्र बाह्य आचरण करने का प्रयत्न करता है,उसके अन्तस्तल में परिवर्तन नहीं आता है। महापुरुषों की तरह उनकी नकल करने हेतु दूसरों को प्रेरित भी करता है, लेकिन स्वयं भीतर से खोखला ही रहता है। क्षमापना पर 'मिच्छा मि दुक्कड़ं' भी कर लेता है, लेकिन आन्तरिक मन में आग की लपटें उठती रहती हैं। उसकी आन्तरिक मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं आता है। सम्प्रदाय में प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग-अलग संभावनाएँ रखते हुए भी आंख मूंद कर चलता है, जिससे स्वयं की प्रेरणा एवं जागृति लुप्त हो जाती है, क्योंकि उसकी भावनाएँ पराश्रित हो जाती हैं। अन्ततः वह लकीर का फकीर बन जाता है।

आज यदि वास्तव में जैन धर्म के सीमित क्षेत्र का विस्तार करना है या जनमानस में धर्म का प्रसार करना है तो सम्प्रदायमुक्त धर्म को स्थापित करना होगा, क्योंकि सम्प्रदाय ने रुग्ण व्यक्तित्व एवं भ्रान्तियों को उत्पन्न किया है, जिससे धर्म अपने मूल केन्द्र से हट कर मात्र परिधिगत परिपाटियों एवं परम्पराओं में सिमट गया है। जब धर्म का केन्द्र कमजोर या विलुप्त हो जाता है तब सम्प्रदाय भी स्वार्थपूर्ति, मिथ्या मान-प्रतिष्ठा और दम्भ का शिकार बन जाता है। अतः सम्प्रदायवाद की बेड़ियों को तोड़ना आवश्यक है, जिससे हम प्रत्येक महापुरुष को नजदीक से देख सकें, समझ सकें तथा आचरण कर सकें। इसी आचरण से प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क से नए विचारों का प्रस्फुटन होगा, उसके व्यक्तित्व में सहिष्णुता जागृत होगी, जिससे सम्प्रदाय मुक्त धर्म व समाज की रचना सम्भव हो सकेगी।

-४०२, सहजानन्द पार्क, शाही बाग, अहमदाबाद

किया हो अगर गुनाह तो सजा हमें मंजूर होगी।
भुला दो उन मतभेदों को अब न भूल फिर कभी होगी।।

जैन धर्म और अध्यात्मवाद

डॉ. बिमला भण्डारी

विश्व के विस्तृत प्रागंण में अनेक विचारधाराएँ व दार्शनिक मान्यताएँ उत्पन्न होती रहती हैं। उनमें से कई अतीत के गर्भ में विलीन हो गईं, किन्तु कुछ ऐसी विशिष्ट कल्याणकारी परम्पराएँ अनादिकाल से प्रवाहित हैं जिनसे मानव संस्कृति में सुख-शांति व आनंद का मंगल अभ्युदय हुआ है।

इन दार्शनिक व तत्त्व प्रधान विचारधाराओं में जैन विचारधारा का अपना विशिष्ट और गौरवपूर्ण स्थान है। जैन दर्शन साधना का दर्शन है। यह भोग का नहीं, प्रत्युत अध्यात्मयोग का दर्शन है। अनादिकाल से अनेकानेक साधकों ने चिन्तन-मनन कर आचार और विचार के क्षेत्र में जो मौलिक क्रांति की है उसमें साधना, त्याग व अध्यात्म की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। जैन धर्म आध्यात्मिक ज्ञान की शक्ति पर पूर्ण विश्वास करता है, जिससे आत्मा अपने बंधनों को सदा के लिए तोड़ देता है और अपनी अनन्त असीम नैसर्गिक शक्तियों का परिपूर्ण विकास करके शाश्वत सिद्धि का लाभ करता है।

जैन धर्म मूलतः एक अध्यात्मवादी दर्शन है। आत्मा के विकारों को दूर कर उसे शुद्ध स्वरूप में लाना ही जैन धर्म का प्रतिपाद्य है। वह आत्मा से परमात्मा तक की यात्रा का पथ प्रशस्त करता है, इसलिए आत्मशुद्धि की साधना का विवेचन जैन धर्म में किया गया है। व्यक्तित्व विकास की अनेक प्रक्रियाएँ जैन धर्म में बताई गई हैं।

मनुष्य मननशील प्राणी है। विवेक, ज्ञान और विचार उसका स्वभाव है। संसार में मानव जीवन दुर्लभ है, यह विचार विश्व के प्रत्येक धर्म में समान रूप से उपलब्ध होता है। संसार के अन्य प्राणियों से मानव की तुलना करने पर उनकी श्रेष्ठता स्वतः सिद्ध हो जाती है। ऐसे दुर्लभ जीवन की उपयोगिता, लक्ष्य और जीवन-यापन की पद्धति के संबंध में मानवबुद्धि सतत चिंतनशील रही है।

सत्य, असत्य, हित-अहित का ज्ञान करना, फिर उस जाने हुए तत्त्व पर विश्वास करना और उसके अनुसार आचरण करना, यह जीवन की त्रिपथता है, उन्नति का मार्ग है। इस मार्ग को जैन धर्म में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र कहा गया है। ये

आध्यात्मिक विकास के महत्त्वपूर्ण कारण होने से रत्नत्रय भी कहे जाते हैं।

वैदिक धारा में जिस प्रकार साधना के तीन रूप हैं- ज्ञान, कर्म और भक्ति; बौद्ध धारा में जिस प्रकार श्रद्धा, प्रज्ञा और शील ये साधना के तीन रूप हैं, उसी प्रकार जैन धारा की अध्यात्म-साधना में सम्यग् दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्र तीनों का गौरवपूर्ण स्थान है। ज्ञान से भावों का सम्यक् बोध होता है, दर्शन से श्रद्धा होती है, चारित्र से कर्मों का निरोध होता है और तप से आत्मा निर्मल होती है।

दूसरे शब्दों में जिससे तत्त्व का यथार्थ बोध मिलता है, वह सम्यग्ज्ञान कहलाता है। जिससे तत्त्वार्थ पर अडिग, अडोल विश्वास प्राप्त होता है उस दृढ़ प्रतीति को सम्यग्दर्शन कहा जाता है और जिस आचार प्रणालिका के द्वारा अन्तःकरण की वृत्तियों को नियंत्रित किया जाता है, जीवन के अन्तरंग और बहिरंग को स्वस्थ व शुद्ध रखा जाता है, ऐसी दोषनाशिनी पद्धति सम्यक्चारित्र कहलाती है। यही जैन धर्म की पावन त्रिवेणी है, जिसमें अवगाहन करने वाला साधक निर्मल, निर्विकार और निष्कलुष बन जाता है।

जैन तत्त्व ज्ञान की यह एक सबसे बड़ी विशेषता है कि वह जीवन को बुझे दीप की तरह शून्य में परिणत नहीं करता। जैन धर्म कहता है कि आत्मा की अंतिम स्थिति अनन्त सुख-संवेदन से परिपूर्ण और असीम ज्ञान के आलोक से सम्पन्न है। उस स्थिति में आत्मा की दिव्य शक्तियाँ निखर उठती हैं। उस परम सुखमय मुक्ति का जो राजपथ जैन धर्म ने निर्दिष्ट किया है, वह सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र का समन्वय है।

जैनधर्म का आधार ही अध्यात्म है। उसकी ज्ञान-मीमांसा में पहला स्थान आत्मा का है। ज्ञान आत्मा का गुण है। उसकी पदार्थ मीमांसा में पहला स्थान आत्मा का है। भगवान महावीर की सारी आचार-व्यवस्था आत्म-विकास की हेतु है। जिसके आदि मध्य और अन्त में सर्वत्र आत्मा ही आत्मा है, जैन धर्म की आध्यात्मिकता में कोई अपवाद नहीं है। जैन धर्म के आत्मिक चिन्तन से भौतिकता के प्रति आकर्षण सीमित हो सकता है, उसके स्व की श्रद्धा से बुद्धिवाद विनम्र हो सकता है और उसके आत्मानुसंधान से वैज्ञानिकता निरंकुश नहीं रह सकती। जैन धर्म अपने आध्यात्मिक स्वरूप के कारण ही आत्मिक

समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। भगवान महावीर ने आत्म-केन्द्रित होने की शिक्षा दी है। आचार्यों ने सच ही कहा है- आत्मबोध ही सम्यग् ज्ञान है, आत्मदर्शन सम्यक् दर्शन है, आत्मरमण ही सम्यक् चारित्र है। अध्यात्म हमारे लिए सर्वोपरि एवं उपयोगी है। यह जीवन का एक ऐसा स्थिर मापदण्ड है, जो जीवन के शेष सब मूल्यों को संतुलित रखता है।

-एसोशिएट प्रोफेसर, दर्शन-विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज़)

हीरा हस्ती की पहचान है

(तर्ज– ये तो सच है कि भगवान है)

हीरा हस्ती की पहचान है, जीवन जिनका प्रकाशमान है।
वचनामृत में अद्भुत करुणा, करुणा साधना की पहचान है।।

सरलता सहजता और अध्ययनशीलता,
तन से मन से लगन से अमिट प्रेरणा–2
तात्त्विक होने के साथ सात्त्विक विपुल कृतित्व,
कल के भरोसे न थे, आज तय कर लो मुकां।
आज आने लगा हमको याद, हस्ती जीवन था ऐसा अगाध,
मन मंदिर में अद्भुत करुणा, करुणा साधना की पहचान है।।1।।

तन की आभा से हो, ऐश्वर्य का भान,
ललाट पर है जिनके ओजस्विता और शान–2
सुन्दर मनोरम मनोहर जिनकी मधुर मुस्कान,
चेहरे पर प्रखरता अधरों पर सूत्र ज्ञान।
देखो छाने लगा जगती में, अपनी पूर्ण आभा के साथ,
वचानामृत में अद्भुत करुणा, करुणा साधना की पहचान है।।2।।

भाग्य उदय हुआ श्रेष्ठ गुरुवर पाया,
जीवन के मरूस्थल में मानों बसंत आया–2
जीवन का हर एक प्राण करे तुमको प्रणाम,
चेतन जपले इनको, पूर्ण श्रद्धा के साथ।
मुझको आता न कोई क्षण याद, जो हो गुरु कृपा बिन आबाद,
मन मंदिर में अद्भुत करुणा, करुणा साधना की पहचान है।।3।।

(महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. द्वारा रचित एवं दीक्षा के अवसर पर उच्चरित)
-प्रेषक मुमुक्षु माला एवं नूतन जैन

ज्योतिष और अध्यात्म

श्री तिलकचन्द तिलक

ज्योतिष उस विद्या का नाम है जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान का सारा हाल जाना जा सकता है। प्रत्येक मानव में अपना भविष्य जानने की अभिलाषा प्राकृतिक होती है। इसी जिज्ञासा के कारण मानव ज्योतिष की ओर आकर्षित होता है।

ज्योतिष की हमारे जीवन में उपयोगिता किसी से छिपी नहीं। विवाह, संतान, व्यापार, नौकरी, यात्रा, भवन-निर्माण आदि सभी महत्त्वपूर्ण प्रसंगों पर ज्योतिष शास्त्र के निर्देश पग-पग पर मार्गदर्शक एवं सहायक सिद्ध होते हैं। घर में लड़की जवान हो, रिश्ता न हो रहा हो अथवा होकर टूट जाता हो, तब डाक्टर की औषधि नहीं-ज्योतिष के फार्मूले ही काम आते हैं। पति-पत्नी की आपस में खट-पट रहती हो, वैवाहिक जीवन नीरस हो रहा हो, तब समस्या सुलझाने में ज्योतिष की भूमिका महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। किस समय कौन सा काम करने से लाभ होगा या हानि इस विषय में ज्योतिष शास्त्र के निर्देश बहुमूल्य माने जाते हैं।

किस वर्ष में किस तारीख को किस समय सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण होगा उसकी कितनी अवधि होगी तथा कहाँ-कहाँ दिखाई देगा, सैंकड़ों वर्ष पूर्व ही यह सब शत प्रतिशत ठीक बता देने की आश्चर्यजनक क्षमता केवल इसी शास्त्र में है।

शास्त्रों में इसकी बड़ी महिमा है। हिन्दुओं के शास्त्रों में इसका प्रमुख स्थान है, क्योंकि इसे वेदों का नेत्र माना गया है। बिना नेत्र के तो बस भटकाव ही भटकाव शेष रहता है।

जैन समाज के सभी सम्प्रदायों को मान्य शास्त्रों में भी ज्योतिष का समावेश है। दिगम्बर जैन सम्प्रदाय में ८४ शास्त्रों को मान्यता प्राप्त है। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज में ४५ शास्त्र माने जाते हैं तथा स्थानकवासी सम्प्रदाय को ३२ शास्त्र मान्य हैं। इन ३२ शास्त्रों में चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र, सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र तथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र तो ज्योतिष से भरे पड़े हैं। इसके अतिरिक्त भगवती आदि सूत्रों में भी स्थानं-स्थान पर ज्योतिष संबंधी प्रतिपादन मिलता है।

ज्योतिष के संबंध में जैन समाज में कई भ्रान्तियाँ हैं। कुछ लोग

इस विचार के हैं कि जैन धर्म अध्यात्मवाद का मार्गदर्शन करता है, हमारा लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति है, हम ज्योतिष का अनुकरण कैसे कर सकते हैं? कुछ कहते हैं कि जैन धर्म तो कर्मवाद को मानता है कि जो कुछ होना है, वह होकर ही रहेगा, उसे कोई भी बदल नहीं सकता, तब एक श्रावक ज्योतिष को कैसे अपना सकता है?

इन भ्रान्तियों के उत्तर में मैं यह कहना चाहूँगा कि जैन धर्म जहाँ कर्मवाद को मानता है, वहाँ पुरुषार्थ को भी मानता है। जैन धर्म डंके की चोट से यह घोषणा करता है कि संसार के लोगों! आप जो कर्म करोगे उसका फल भी आपको भोगना पड़ेगा, अतः बुराइयों से बचो, किसी को दुःख मत दो, क्योंकि पाप का फल दुःखदायक होगा। इसके साथ ही जैन धर्म यह भी कहता है कि आप अपने पुरुषार्थ (तप) द्वारा उन कर्मों का जो समय आने पर आपको दुःख देने वाले हैं, समय आने से पहले ही नाश भी कर सकते हो। जिन कर्मों का अस्तित्व ही नहीं रहेगा तो दुःख कैसे मिलेगा? अर्थात् न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। कर्मों को उनका उदय होने से पहले ही नाश कर देने की क्रिया को जैन धर्म की भाषा में सकाम निर्जरा कहते हैं।

यहाँ दो बातें सामने आईं। एक यह कि कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा, दूसरी यह कि कर्मों का फल भोगे बिना ही कर्मों का नाश भी किया जा सकता है। इन दोनों बातों में विरोधाभास दिखाई देता है, किन्तु वास्तव में कोई विरोधाभास नहीं है। जैन धर्म का एक मौलिक सिद्धान्त है- अनेकान्तवाद। यह अनेकान्तवाद इस विरोधाभास को दूर करता है। प्रस्तुत संदर्भ में- कर्म दो प्रकार के हैं, एक साधारण दूसरे निकाचित। निकाचित कर्मों का भोगे बिना छुटकारा नहीं, जबकि साधारण कर्मों का तप-साधना द्वारा स्थितिघात, रसघात हो जाता है।

अब अध्यात्मवाद को लें। आध्यात्मवाद और ज्योतिष दोनों में कोई टकराव नहीं है, बल्कि कई बातों में दोनों में समानता है। ज्योतिष धार्मिक कृत्यों का समर्थन करता है। एक ज्योतिषी ज्योतिष के आधार पर भविष्य कथन करता है तो एक अध्यात्मवादी साधना की ऊँचाइयों को छूता हुआ अपनी साधना के बलबूते ही भविष्य कथन कर देता है।

अध्यात्मवाद प्रत्यक्ष रूप में लोगों को शुभ कर्मों में प्रवृत्त कर मोक्ष-प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन करता है, तो ज्योतिष अप्रत्यक्ष रूप में मानव को बुराइयों से हटा कर शुभ कार्यों की प्रेरणा देता है, कि इस

संसार के दुःखों से छुटकारा पा कर मोक्ष गति को प्राप्त किया जा सके।

ज्योतिष के विषय में उक्त कथन की पुष्टि में नीचे कुछ प्रमाण दे रहा हूँ-

१. प्राचीन परम्परा के अनुसार जब किसी की जन्म-पत्रिका लिखना हो तो सर्वप्रथम श्री गणेश जी को (अथवा ईश्वररूप अपने इष्ट को) वन्दन-स्तुति कर के ही जन्म-पत्रिका लिखी जाती है और जन्मपत्रिका की समाप्ति पर निम्न श्लोक लिखा जाता है-

धर्मेण हन्यते व्याधिः धर्मेण हन्यते ग्रहः।
धर्मेण हन्यते शत्रुः यतो धर्मस्ततो जयः।।

अर्थात् धर्म व्याधियों का नाश करता है, धर्म ग्रहों के कुप्रभाव को दूर करता है, धर्म के प्रभाव से शत्रुओं का दमन होता है, जहाँ धर्म हो, वहीं विजय होती है, सफलता मिलती है।

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि जन्म-पत्रिका निर्माण के पीछे भी धर्माचरण की प्रबल भावना निहित है।

२. जन्म के समय अथवा जीवन में कभी भी यदि किसी जातक को कोई ग्रह पीड़ा सताती है तो उसके निवारण हेतु जप-दान आदि धार्मिक कृत्य ही बताए जाते हैं।

३. जब ज्योतिष की साधना करनी हो तब साधक को अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, नम्रता आदि व्रतों का पालन तथा छल-कपट, लोभ, क्रोध व अहंकार का त्याग करना होता है। अर्थात् धर्म के रंग में रंग जाने पर एवं कठोर तप के पश्चात् ही साधना की पूर्ति होती है। यह बात अलग है कि आज ९९ प्रतिशत (निनानवे प्रतिशत) ज्योतिषी यह जानते ही नहीं, कि ज्योतिष की साधना कैसे की जाती है, साधना करना तो दूर की बात है।

इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि ज्योतिष का प्रतिपादन प्राचीन ऋषियों मुनियों ने संसार के कल्याण के लिए किया और इसकी नींव धर्माचरण पर ही रखी गई है। इसीलिए मैंने यह लिखा कि ज्योतिष भी अध्यात्मवाद की तरह मानव को बुराइयों से हटा कर शुभ कर्मों की प्रेरणा देता है।

जो ज्योतिषी कुण्डली के ग्रहों के आधार पर भविष्य कथन करता है, उसकी दशा घुटने के बल चलने वाले उस शिशु जैसी है जो चलना सीखने के लिए वाकर (Walker) का सहारा लेता है। ज्योतिष

की परिपूर्णता होने पर भविष्य कथन अन्तःस्फूर्ति द्वारा होता है। यह "अन्तःस्फूर्ति" साधना के बिना संभव नहीं होती।

जिस ज्योतिषी के जीवन में जितना धर्माचरण होगा, जितनी साधना होगी, तप-त्याग होगा, उसके भविष्य कथन में सत्यता भी उसी अनुपात में होगी।

-११४ ए, गांधी नगर, जम्मू-१८००४

क्या बच्चों पर निषेध का अंकुश उचित है?

सुश्री हेमलता मेहता

कहते हैं बच्चों का मन कोरा कागज होता है। उस पर जो उत्कीर्ण किया जाता है वह यथावत् उत्कीर्ण हो जाता है, परन्तु बालमन जिज्ञासु भी होता है। वह अपने में समाहित सम्पूर्ण ऊर्जा को खर्च कर एक ही पल में सम्पूर्ण जगत को जान लेना चाहता है। जब इस बालमन पर निषेध का अंकुश लगाया जाता है तो उसका चपल मन उसी कार्य को करने की जिद्द पर आ जाता है। उदाहरण के तौर पर जब छोटे बच्चे को टी.वी. न देखने की हिदायत दी जाती है, खेलने की मनाही की जाती है तो वह जानबूझकर उस कार्य को करेगा। उसे जबर्दस्ती धर्म की पुस्तक देकर बिठाया जाए तो वह मन से उस ज्ञान को ग्रहण नहीं करेगा। अतः निषेध की अपेक्षा उसकी विवेक बुद्धि को परिष्कृत किया जाना चाहिए, ताकि वह खुद निर्णय कर सके कि उसके हित में क्या है? उसे 'टी.वी. मत देखो' के स्थान पर यह समझाया जाना चाहिए कि जिन्दगी में खेलकूद, टी.वी. आदि का कितना महत्त्व है और पढ़ाई, धर्म व संस्कारों का कितना? उसे टी.वी. पर कैसे कार्यक्रम देखने चाहिए जिससे उसके ज्ञान में वृद्धि हो। उसे समझाया जाना चाहिए कि खेलकूद जिस तरह शारीरिक सुदृढ़ता के लिए आवश्यक हैं उसी तरह मानसिक रूप से सुदृढ़ होने के लिए धर्म का जीवन में कितना महत्त्व है। इस तरह हर क्षेत्र का अपना महत्त्व समझाकर उसे उसकी इच्छानुसार कार्य करने की छूट दें तो वह हर चीज को मन से ग्रहण करेगा। उसकी विवेक बुद्धि इतनी उत्कृष्ट बन जाएगी कि वह कोई गलत काम नहीं करेगा। निषेध के स्थान पर विवेक बुद्धि की उत्कृष्टता ही बालकों के भावी जीवन को सुदृढ़ बनाएगी।

द्वारा रिखबचन्द मेहता
शांति स्ट्रीट, समदड़ी, जिला- बाड़मेर (राज.)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

✯ श्री धर्मचन्द जैन

प्र.31 क्षायिक समकित किसे कहते हैं?

उत्तर– जो समकित एक बार जीव को प्राप्त होने के बाद कभी भी वापस नहीं जाये, उसे क्षायिक समकित कहते हैं। अनन्तानुबंधी चौक व दर्शन त्रिक, इन सात प्रकृतियों का पूरी तरह क्षय होने पर जो आत्मिक श्रद्धान जीव को प्राप्त होता है, उसे क्षायिक समकित कहते हैं।

प्र.32 क्षायिक समकित किन-किन जीवों को प्राप्त हो सकती है?

उत्तर यद्यपि क्षायिक समकित चारों ही गतियों के जीवों में पायी जाती है, किन्तु फिर भी यह निश्चित है कि क्षायिक समकित प्राप्ति का प्रारंभ मनुष्य गति से ही संभव है अर्थात् प्राप्ति की प्रक्रिया कर्मभूमिज मनुष्य में ही संभव है, किन्तु प्रक्रिया की पूर्णता चारों ही गतियों के जीवों में संभव है। कहा भी है- पट्ठवगो उ मणुसो, निट्ठदगो चउसु वि गईसु।

प्र.33 क्षायिक समकित की क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर १. क्षायिक समकित सादि अनन्त होने के साथ ही इसकी यह भी विशेषता है कि क्षायिक समकित आने के बाद आगामी भव का आयुष्य नहीं बंधता है। यदि क्षायिक प्राप्ति के पूर्व ही आगामी भव का आयुष्य बंध हो चुका है तो जीव को उस गति में जन्म लेना ही पड़ता है।

२. क्षायिक समकित प्राप्त करने वाला अबद्धायु होने पर नियमा उसी भव में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यदि बद्धायु हो तो तीन अथवा चार भव से अधिक नहीं करता है। तीन भव में वर्तमान का मनुष्य भव, अगला नारकी अथवा देवता का भव तथा तीसरा मनुष्य भव समझना चाहिए। चार भव तभी संभव हैं जब क्षायिक समकित प्राप्ति से पूर्व ही युगलिक का आयु बंध चुका हो। ऐसी स्थिति में वर्तमान मनुष्य का भव, दूसरा युगलिक का, तीसरा देवता का तथा चौथा मनुष्य का भव करके जीव मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

३. क्षायिक समकित चौथे से चौदहवें गुणस्थान तक तथा सिद्धावस्था में भी पायी जाती है। इसकी प्राप्ति की आदि तो है, किन्तु अन्त नहीं

होता है। इस कारण इसकी स्थिति सादि अनन्त कहलाती है।

प्र. 34 क्या अनादि मिथ्या दृष्टि क्षायिक समकित प्राप्त कर सकता है?

उत्तर नहीं, अनादि मिथ्या दृष्टि प्रथम बार उपशम अथवा क्षयोपशम दोनों में से कोई एक समकित प्राप्त करता है। क्षयोपशम समकित से जीव क्षायिक समकित को प्राप्त कर सकता है, किन्तु उपशम समकित से सीधे क्षायिक समकित को प्राप्त करना संभव नही है।

प्र.35 क्षायिक समकित जीव के किन-किन भेदों में पायी जाती है?

उत्तर क्षायिक समकित जीव के निम्न भेदों में पायी जाती है-

पहली चार नारकी के अपर्याप्त व पर्याप्त- ८ भेद

तिर्यञ्चों में- स्थलचर युगलिक के अपर्याप्त व पर्याप्त- २ भेद

मनुष्यों में- १४ कर्मभूमिज, ३० अकर्मभूमिज इन ४५ के अपर्याप्त व पर्याप्त- ९० भेद

देवों में- १५ परमाधामी, ३ किल्विषी इन १८ को छोड़कर शेष ८१ इस प्रकार के देवों के अपर्याप्त व पर्याप्त- १६२ भेद

इस प्रकार कुल ८+२+९०+१६२ = २६२ भेद।

प्र.36 जो जीव वर्तमान में क्षयोपशम समकित में हैं, वे यदि क्षायिक समकित प्राप्त करें तो उनमें कौन-कौन से भंग बनते हैं?

उत्तर क्षयोपशम समकित से जब जीव क्षायिक समकित को प्राप्त करता है, तो उसकी प्राप्ति की प्रक्रिया में निम्नलिखित तीन भंग बनते हैं-

१. पहला भंग- ४ का क्षय, २ का क्षयोपशम १ का वेदन-

अनन्तानुबंधी चौक का स्थायी रूप से क्षय होने, मिथ्यात्व व मिश्रमोहनीय का क्षयोपशम (प्रदेशोदय रहे, विपाकोदय नहीं रहे) तथा समकित मोहनीय का विपाकोदय होने पर यह पहला भंग घटित होता है। ऐसी स्थिति चौथे से सातवें गुणस्थानवर्ती जीवों में संभव है। इस भंग की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाझेरी की होती है।

२. दूसरा भंग - ५ का क्षय, १ का क्षयोपशम, १ का वेदन-

अनन्तानुबंधी चौक के साथ मिथ्यात्व मोहनीय का भी पूर्णतः क्षय हो जाय, किन्तु मोहनीय का क्षयोपशम (प्रदेशोदय) बना रहे तथा समकित मोहनीय का वेदन अर्थात् विपाकोदय हो, ऐसी जीव की स्थिति होने पर यह दूसरा भंग बनता है। इस भंग में गुणस्थान ४ से ७ तक तथा इसकी स्थिति जघन्य व उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त की

होती है।

३. तीसरा भंग- ६ का क्षय, १ का वेदन-

अनन्तानुबंधी चौक, मिथ्यात्व मोहनीय तथा मिश्र मोहनीय इन ६ प्रकृतियों का जब आत्यन्तिक (स्थायी) क्षय हो जाय, किन्तु समकित मोहनीय का विपाकोदय बना रहे, तब यह तीसरा भंग बनता है। इस भंग में भी गुणस्थान ४ से ७ तक तथा इसकी स्थिति भी जघन्य- उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त की होती है।

इन तीनों भंगों में से दूसरे, तीसरे भंग वाला जीव अन्तर्मुहूर्त में क्षायिक समकित को अवश्य प्राप्त कर लेता है।

क्षायिक समकित में उक्त सातों प्रकृतियों का क्षय होना आवश्यक है। इसी कारण इसमें सात प्रकृतियों की अपेक्षा अन्य कोई भंग बनना संभव नहीं है।

प्र.37 क्षायिक समकित वाला जीव कौन-कौन सी श्रेणियां कर सकता है?

उत्तर क्षायिक समकित वाला जीव उपशम तथा क्षपक दोनों ही श्रेणियाँ कर सकता है। जो चरम शरीरी जीव हैं, वे क्षपक श्रेणी ही करते हैं तथा उसी भव में मोक्ष में जाते है। जो चरम शरीरी न होकर पूर्व बद्धायु वाले होते हैं, वे उपशम श्रेणी कर सकते हैं। यदि वे उपशम श्रेणी के गुणस्थानों (८ से ११ तक) में काल कर जाये तो पाँच अनुत्तर विमान में देव रूप में उत्पन्न होते हैं।

-रजिस्ट्रार

अ.भा. श्री जैन रत्न आ.शि. बोर्ड, जोधपुर

क्रमशः(3)

रत्नसंघ के मूल महापुरुष

भंडारी सरदारचन्द जैन

छठे पट्टधर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री शोभाचन्द जी म.सा.

माता-पार्वतीदेवीजी

पिता- श्री भगवानदास जी छाजेड़, ओसवंशीय

जन्म- वि.सं. 1914 कार्ती सुद 5, जोधपुर (राज.)

दीक्षा- वि.सं. 1927, माघ सुदि 5, जयपुर (राज.)

स्वर्गवास- वि.सं. 1983, सावण वद अमावस, जोधपुर (राज.)

-त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर

अमेरिकी बालकों में सेवाभाव

श्री लालचन्द्र जैन

सदियों से चली आ रही संयुक्त परिवार की संस्कृति अब धीरे-धीरे भारत से विदा हो रही है। रुग्ण और वृद्ध पारिवारिक लोगों की सेवा से आज के युवक मुँह चुरा रहे हैं और उन्हें वृद्धाश्रम में भेजकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ रहे हैं। वहीं संसार के धनाढ्य देश अमेरिका में, जहाँ की संस्कृति में व्यक्तिगत स्वार्थ अधिक होने से परिवारों का टूटना अनिवार्य-सा है, कुछ ऐसे युवक-युवतियाँ भी हैं, जो अपने वृद्ध और रुग्ण माता, पिता, दादा, दादी की सेवा के लिये अपनी पढ़ाई की भी परवाह नहीं करते। क्या यह हमारे लिये सुखद आश्चर्य और सेवा का महान् उदाहरण प्रस्तुत नहीं करता? ऐसे ही कुछ युवक-युवतियों के साक्षात्कार का अनुवाद यहाँ प्रस्तुत है।

जेसी द्वारा माता की सेवा

चौदह वर्षीय जेसी अपनी माता के लिये भोजन बनाता है, उसके टट्टी-पेशाब के पात्र को साफ करता है, उसके बाल धोता है,उसके कपड़े धोता है,उसे भोजन कराता है और स्कूल जाने के पहले अपने घर के द्वार को अच्छी तरह बंद करके ताला लगा देता है, क्योंकि उसकी माँ पलंग से उठ नहीं सकती। जेसी अभी न्यूयार्क के ब्रोकलिन में एक स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ रहा है। अपनी माँ की सेवा के लिये चिड़ाने पर उसने एक बार स्कूल में सहपाठी से लड़ाई भी कर ली, जिससे उसे स्कूल से निकाल दिया गया।

उसकी ४८ वर्षीय माँ रोजमेरी जो पहले किसी व्यापारिक संस्थान में उपसंचालिका थी, अभी लकवाग्रस्त होकर अपंग हो गई है। जब जेसी से पूछा गया कि "वह अपनी पढ़ाई की भी परवाह न कर अपनी माँ के लिये सेवा क्यों करता है?" तो उसने बड़े मधुर लहजे में कहा कि "मैं अपनी माँ के लिये कुछ भी कर सकता हूँ। माँ ने मुझे जन्म दिया है, तो उसकी सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है।" जेसी का पिता टैक्सी चालक था, पर उसने उसकी माँ को तलाक दे दिया था। जेसी सुबह ६ बजे उठ जाता है और अपने लिये, माँ के लिये और दादी के लिये नाश्ता तैयार कर फिर स्कूल जाता है। उसकी ८५ वर्षीय दादी रोजसमर गुर्दे की बीमारी से ग्रस्त है। दोपहर में स्कूल से आकर जेसी

अपनी माँ और दादी को खाना खिलाता है। शाम को स्कूल से आकर फिर खाना बनाकर माँ और दादी को खिला कर स्वयं खाता है। फिर बर्तन साफ कर सोने जाता है। सोने के पहले वह अपना स्कूल का होमवर्क पूरा कर फिर सोता है। जेसी की माँ रोजमेरी कहती है कि "जेसी के दिल में मेरे प्रति अगाध प्रेम है।"

जेसी ने अपनी गृहस्थी अच्छी तरह चलाने के लिये एक समाचार पत्र की दुकान पर कुछ घंटों के लिये नौकरी भी कर ली है। जेसी पाँचवी और छठी कक्षा में दो-दो बार फेल हो चुका है, किन्तु अब उसके दिन बदल रहे हैं। अब उसके मित्र उसके काम में हाथ बंटाने लगे हैं। उसके शिक्षक भी अब उसकी पढ़ाई पर अधिक ध्यान देने लगे हैं। यद्यपि जेसी का बचपन उससे बिछुड़ गया है, वह समय से पहले ही बड़ा हो गया है, पर स्कूल के प्रधानाध्यापक जॉन गिबसन का मानना है कि अब जेसी अपने अध्ययन में भी तरक्की करने लगा है, अब उसके बुरे दिन बीत गये हैं।

अलबर्ट आइंस्टीन कॉलेज के प्रोफेसर पीटर अर्नो का कथन है कि जेसी उन परिवारों में से एक का उदाहरण है, जो अपने परिवार के लिये औषधोपचार का, नर्सिंग होम का प्रबंध नहीं कर सकते, उनके लिये ऐसे बच्चे ही रोगी और वृद्ध परिजनों की सेवा करने वाले बनते हैं। उनके अनुमान से अमेरिका में लगभग ५० लाख ऐसे परिवार अवश्य होंगे, जिनमें युवक-युवतियाँ ही इस सेवा धर्म को पूरी तल्लीनता से निभाते हैं।

माँ की सेवा करने वाली रडजी विल्सन

दो वर्ष पहले जब बच्चों का ग्रीष्मकालीन शिविर 'द्विगुणित सेलेरोसिस' रोग से ग्रसित बीमारों की सेवा के लिये लगा था, तब ११ वर्षीय रडजीविल्सन ने इसी रोग से ग्रस्त अपनी ३४ वर्षीय माँ एप्रिलविल्सन की सेवा करने की ठान ली थी। यह पूछने पर कि "वह अपनी माँ की सेवा क्यों करती है?" उसने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि "मैं अपनी माँ से इस संसार में आई हूँ, अतः मेरा कर्त्तव्य है कि मैं सदैव ध्यान रखूँ कि माँ को किसी वस्तु की कमी न हो।"

उसकी माँ को १९९८ में उपर्युक्त रोग लगा था। उस समय उसकी माँ फलोरिडा के जेक्सनलिवो की नगरपालिका में एक निर्वाचित सदस्य के रूप में काम कर रही थी। उसकी माँ को यह भय था कि

ग्यारह वर्षीय बालिका ऐसी रोग ग्रसित माँ की क्या सेवा कर सकेगी? किन्तु उसकी पुत्री रडजी ने निश्चय किया कि वह तन-मन से माँ की सेवा करेगी। यद्यपि उसकी माँ ऑफिस जाती है, पर वह रोग से बहुत कमजोर हो गई है, जिससे वह घर का कुछ भी काम नहीं कर सकती है। किन्तु उस छोटी-सी बच्ची रडजी ने घर का सारा काम संभाल लिया है।

जब रडजी पन्द्रह वर्ष की हो गई, तब वह अपनी माँ के साथ दादी के घर चली गई। ६४ वर्षीय उसकी दादी सडेला के एक साथ उसकी एक अंधी बहिन तेमल भी थी, जो ३० वर्ष की थी। अब रडजी पर दुगुने गृहकार्य का भार पड़ गया था। फिर भी वह पढ़ाई में मध्यम अंक प्राप्त करती और चार लोगों का घर का काम बखूबी करती थी। इसका क्या रहस्य था? तल्लीनता से एक साथ कई काम करना। एक तरफ भोजन तैयार करती, तो साथ-साथ धुलाई मशीन में कपड़े डाल देती। जब कपड़े सुखाने वाली मशीन से कपड़े सूख कर बाहर आते तब फटाफट इस्त्री कर कपड़ों को तह कर रख देती। बाद में सबको भोजन करा कर स्कूल जाती। जब उससे पूछा गया कि "इतना सारा काम एक साथ कैसे कर लेती है?" उसका सहज उत्तर था कि 'यह तो मेरा कर्त्तव्य है, मैं यह सोचती भी नहीं कि अन्य लड़कियों से मेरा जीवन भिन्न है और मुझे बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ रहा है।" रडजी का बचपन इतना व्यस्त रहा कि उसे पता ही नहीं लगा कि वह कब बच्ची से युवती बन गई है।

माता की सेवा ही प्रथम कर्त्तव्य

मेरी रोज जब आठ वर्ष की थी, तब उसकी माँ उसकी स्कूल की पोशाक सिलती थी, उसे खेलकूद में सदैव प्रथम पंक्ति में रखती थी। एक दिन खेल में ही उसका पाँव टूट गया था और उसे अस्पताल में भर्ती करना पड़ा था। उसे एक महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा था, तब उसकी माँ ने उसकी जो सेवा की थी, उसे वह अभी तक भूली नहीं है। उसका कहना है कि "मेरी माता तो साक्षात् देवी स्वरूप है, उसने मेरी ऐसी सेवा की है कि मुझे अस्पताल में भी किसी वस्तु की कमी नहीं रहने दी।" यह अठारह वर्षीय ब्रुकनिन निवासिनी मेरी रोज का कथन है।

मेरी रोज की माता ईस्टर को 'लेथरल फलेरोसिस' की बीमारी हो गई। डाक्टरों ने १९९७ में उसे बता दिया था कि उसकी माँ पाँच वर्षों से अधिक नहीं जी पायेगी। इसके तीन दिन बाद ही मेरी रोज का पिता जेम्स हृदयगति रुक जाने से मृत्यु को प्राप्त हो गया। अब ईस्टर की सेवा करने वाली परिवार में एक मात्र बड़ी लड़की मेरी रोज ही थी। माँ की बीमारी भयंकर थी, वह ठीक होने वाली नहीं थी, दिनों-दिन उसकी माँ को बोलने में और सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। मेरी रोज अपनी माँ और २३ वर्षीय भाई फ्रांसिस के साथ दो कमरों के किराये के मकान में रहती है। दसवीं की परीक्षा पास करने के पहले से ही मेरी रोज नित्य प्रति ५ बजे उठती है, अपनी माँ को भोजन कराती है, उसके कपड़े बदलती है और स्कूल भागती है। स्कूल से लौट कर वह माँ को बाथरूम ले जाती है, उसे कुछ नाश्ता कराती है, घर की सफाई करती है, कपड़े धोती है और खाना बनाती है। शाम के भोजन के समय रोटी के छोटे टुकड़े बनाकर माँ को खिलाती है। उसकी माता ईस्टर से पुत्री के विषय में पूछने पर उसने कहा-"वही मेरी भुजाएँ हैं, वही मेरे पैर हैं, वही मेरा जीवन है, मैं तो उसके बिना जी भी नहीं सकती।"

दो वर्ष तक मेरी रोज अपनी माँ के पास ही सोई है। जब माँ को श्वास लेने में कठिनाई होती तब उसे एक दो घूँट पानी पिलाकर उसकी श्वसन क्रिया ठीक करती, थोड़ी देर बाद माँ सो जाती, तब तक चार बज जाते और यह एक घंटा ही सो पाती। कभी-कभी वह सोचती कि भगवान माँ को क्यों नहीं उठा लेते। तुरंत ही उसके विचार बदलते "मैं माँ के बिना कैसे जी पाऊँगी?" भाई फ्रांसिस उसे सप्ताह में एक दिन-रात के लिये मिलता है, वही उसका सहारा है। मेरी रोज कहती है कि "मैंने अपने चारों तरफ एक दीवार खड़ी कर दी है, ताकि लोग मेरी कठिनाइयों से अनभिज्ञ रहें।" उसकी माँ को ५५वें जन्मदिन पर हार्ट अटेक आया और उसे नर्सिंग होम ले जाया गया। ईस्टर को अब भी विश्वास है कि वह ठीक होकर घर लौटेगी, किन्तु मेरी रोज जानती है कि माँ अब घर नहीं लौटेगी, उसे माँ की सेवा का पूरा लाभ लेना चाहिए।

-१०/५९५, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

संयुक्त परिवार : वट-वृक्ष की छांव

श्री दिलीप धींग

परिवार भारतीय समाज और संस्कृति की आधारभूत इकाई है। संयुक्त कुटुम्बों के विभाजित होने से स्थापित एकल परिवारों में उस कौटुम्बिक भावना, सहानुभूति और संवेदना का विकास नहीं हो पा रहा है, जिसकी सर्वाधिक आवश्यकता आज हमारे समाज को है। हमारे नौनिहाल बड़े-बड़े ऊँचे-ऊँचे और महंगे विद्यालयों में अत्याधुनिक शिक्षा प्राप्त कर रहे है। परन्तु वे ज्ञानार्जन नहीं कर पा रहे है। वहाँ मस्तिष्क/बुद्धि के विकास की शिक्षा तो दी जा रही है, परन्तु मन, भावना और चेतना के विकास की कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। नई पीढ़ी संस्कृति और परम्पराओं में रचे-बसे मूल्यों से अनभिज्ञ होती जा रही है। दुःखद यह है कि आने वाले समय के दादा-दादी और नाना-नानी भी कोरे हो जाएंगे। अगली पीढ़ियों के लिए विरासत में छोड़ने योग्य उनके पास कुछ नहीं होगा।

इस त्रासदी से बचने के लिए हमें हमारा आत्म-केन्द्रित स्वभाव छोड़कर कुटुम्ब और समाज के महत्त्व को समझना और समझाना पड़ेगा। आवास, आजीविका आदि परिस्थितिजन्य कारणों से स्थापित एकल परिवार वालों को अपने परिवार के दादा-दादी और अन्य वरिष्ठ सदस्यों को अत्यन्त सम्मानपूर्वक अपने साथ रखना चाहिये। अर्थात् बड़ों की छत्र-छाया में छोटों को रहना चाहिये। आज्ञाकारिता से अनुशासन और सहिष्णुता जैसे ऊँचे सद्गुण विकसित होते हैं।

बड़े-बुजुर्ग अनुभवों के वट-वृक्ष होते हैं। उनकी छांव में गहरी शीतलता, शान्ति और सुकून है। सौभाग्यशाली ही उसका एहसास कर पाते हैं। बच्चों और बुजुर्गों के संबंध आत्मीय, मधुर, पवित्र और प्रेरणास्पद होते हैं। बच्चे सहज ही सबसे जुड़ जाते हैं, इसलिए सबको सबसे जोड़े रखते हैं। वे संबंधों में सेतु की भूमिका निभाते हैं। ये स्नेहिल संबंध हमारी कौटुम्बिकता और सामाजिकता की नींव हैं।

बड़े-बुजुर्गों का सान्निध्य पाने के लिए अवकाश-काल में बच्चों को नाना-नानी व दादा-दादी के पास भेजना चाहिये तथा स्वयं को भी उनकी सेवा में उपस्थित होते रहना चाहिये। छोटे बड़ों के पास रहें, उनकी बात सुनें, जीवन अनुभव प्राप्त करें तथा सामाजिक व्यवहार

सीखें। उनसे प्राप्त मंगल-आशीष जीवन की अमूर्त सम्पत्ति है। बड़ों के मुखारविन्द से सुनी गई शिक्षाप्रद कथा-कहानियां जीवन में स्थायी तौर पर संस्कारों का निर्माण करती हैं। सामूहिक साधना, सत्संग और स्वाध्याय की पवित्र परम्परा का अनुपालन वर्तमान की अनेक समस्याओं का अच्छा समाधान है। इस परम्परा में ज्ञान, ध्यान शिष्टाचार, समाज, अतीत, वर्तमान, भविष्य आदि बहुत कुछ विद्यमान है।

-बम्बोरा-३१३७०६, जिला- उदयपुर (राज.)

जीवन तो लगता छलना है

डॉ. महेन्द्र भानावत

(१)

जाना पर कुछ भी नहीं जाना।
सबका सब रह गया अन्जाना।।
अन्तर का तम ही क्या कम है।
बाह्य ज्योति में नहीं दमखम है।।
यह वैभव भटकाये भव भव।
भौतिकता का कैसा कलरव।।
अन्त समय बुझकर जलना है।
जीवन तो लगता छलना है।।

(२)

कई जन्म जन्मान्तर भटका।
जाने कहाँ कहाँ नहीं अटका।।
गुरु बिन ज्ञान नहीं कुछ पाया।
जो था उसका हुआ सफाया।।
गति सुगति मुगति क्या जानूं।
कैसे मणि गणि को पहचानूं।।
यहीं द्वन्द्व खाते चलना है।
जीवन तो लगता छलना है।।

-पूर्व निदेशक भारतीय लोककला मण्डल,
३५२-श्रीकृष्णपुरा, उदयपुर-३१३००१

(क्रमशः 10)

दशवैकालिक सूत्र : चूलिका सार

डॉ. अमृतलाल गांधी

दशवैकालिक सूत्र की समाप्ति पर उसके शिखर के रूप में दो चूलिकाएँ कही गई हैं- प्रथम का नाम रति वाक्या और द्वितीय का नाम विविक्तचर्या है।

संयम में रति (रुचि) उत्पन्न करने वाले वचन जिसमें हों, वह रतिवाक्या है। संयम ग्रहण करने के पश्चात् अनुकूल-प्रतिकूल प्रसंगों के कारण संयम में यदि अरति (अरुचि) उत्पन्न हो जाय और साधक का चित्त संयम छोड़कर गृहवास में जाने का बन जाय तो वैसी स्थिति में संयम छोड़ने के पूर्व, इस रतिवाक्या चूलिका में बताये गये अठारह स्थानों पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। इसमें वर्णित अठारह स्थान इतने वैराग्य गर्भित एवं प्रभावोत्पादक हैं कि संयम में अस्थिर बने हुए साधक का मन पुनः संयम में उसी तरह स्थिर हो जाता है जैसे अंकुश से हाथी और लगाम से घोड़ा।

प्रस्तुत चूलिका में वर्णित अठारह स्थानों में मुख्यतया गृहस्थाश्रम की अनुपादेयता और संयम की उपादेयता का वर्णन है। गृहस्थाश्रम को घोर क्लेशमय, बन्धन कारक और सावद्य बताया गया है जबकि संयम को सुखमय, क्लेशरहित, स्वतंत्र, मोक्षरूप और निरवद्य बताया है। मानवीय कामभोगों को क्षणिक, तुच्छ और असार बताया है। साधक संयम से ऊबकर गृहस्थाश्रम में जाना चाहता है, परन्तु उसे सावधान करते हुए कहा गया है कि भोगों से तृप्ति की आशा करना दुराशा मात्र है। अतः आकांक्षा रहित होकर संयम का पालन किया जाय तो वह स्वर्ग के समान सुखदायी है और यदि आकांक्षा है तो संयम दुःख रूप है। इस प्रकार संयम की उभयरूपता बताकर संयम में रमण करने का उपदेश इस चूलिका में दिया गया है।

द्वितीय चूलिका 'विवित्त चरिया' में साधु की चर्या, गुण और नियमों का उल्लेख किया गया है। स्थिरवास नहीं करना, सामूहिक भिक्षा करना, एकान्तवास करना आदि चर्या है। मूल और उत्तरगुण के रूप में पाँच महाव्रत आदि प्रत्याख्यान हैं और स्वाध्याय, कायोत्सर्ग आदि नियम हैं। इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि साधु की समस्त प्रवृत्तियाँ आत्माभिमुखी होनी चाहिये, संसाराभिमुखी नहीं।

साधु किसी पदार्थ पर ममत्वभाव नहीं रखे, साधु गृहस्थ की वैयावृत्त्य नहीं करे, वंदन और पूजन नहीं करे। मुनि सदैव संक्लेश रहित साधुओं के

साथ रहे जिससे कि चारित्र की कोई हानि न हो। यदि कदाचित् अपने से अधिक गुणी अथवा अपने समान गुण वाला निपुण साथी नहीं मिले तो पाप कर्मों का वर्जन करता हुआ कामभोगों में अनासक्त भाव से संघ में अकेला ही विहार करे, किन्तु दुर्गुणियों के सहवास में नहीं रहे।

जिस गांव में साधु मर्यादानुसार उत्कृष्ट प्रमाण तक रह चुका हो अर्थात् वर्षाकाल में चातुर्मास और शेषकाल में एक माह रह चुका हो, वहाँ दो गुणा काल (दो चातुर्मास और दो मास) का अंतर किये बिना नहीं रहे।

साधु रात्रि में पहले और पिछले प्रहर में अपनी आत्मा के द्वारा सम्यक् प्रकार से देखे और सोचे कि मैंने क्या किया है और मेरे लिये क्या कार्य करना शेष है? वह कौनसा कार्य है जिसे मैं कर सकता हूँ और प्रमादवश नहीं कर रहा हूँ। इस प्रकार साधु सदैव आत्म-निरीक्षण करे और जहाँ कहीं भी मन, वचन और काया को दुष्प्रवृत्त होता हुआ देखे तो साधु स्वयं ही अपनी लगाम खींच कर संभल जाय। अन्त में कहा गया है कि साधु को सदैव समस्त इन्द्रियों को समाहित कर आत्मा की सतत रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि अरक्षित आत्मा जन्म-मरण के मार्ग को प्राप्त होता है और पाप से सुरक्षित आत्मा ही सब दुःखों से मुक्त होता है।

प्रमुख संदर्भ ग्रन्थ-दशवैकालिक सूत्र-तत्त्वावधान पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित

-सेवानिवृत्त प्राध्यापक, जोधपुर विश्वविद्यालय

७३८-नेहरूपार्क रोड, सरदारपुरा, जोधपुर

सामायिक में योगानुभूति

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

1. सामायिक एक योग साधना है। इसमें मन, वचन और काया के व्यापार को नियन्त्रित करना पड़ता है। सामायिक में समयानुभूति (आत्मानुभूति) भी होती है।
2. सामायिक स्वकीय अनुभूतियों का भंडार है। आत्मा की परमात्म साधना है। इसमें अमृत पान की भी अनुभूति होती है। इस पान का अनुभव मुक्तजन ही कर सकते है।
3. सामायिक योगानुभूति की मंजूषा है। इसमें ज्ञान और आत्मानंद की यौगिक क्रियाएँ स्वतः समाविष्ट हैं। योगानुभूति की अंतिम परिणित सिद्धावस्था है। सामायिक में जो सहज अनुभूतियाँ होती हैं, उनका संबंध आत्म-साक्षात्कार से है।

-छोटी कसरावद

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

Aptamimamsa (Critique of an Authority)- Translation etc. by Nagin J. Shah, ***Publisher***-Sanskrit-Sanskriti Granthamala, 23 Valkeshvar Society Ambawadi, Ahmedabad-380015, ***Book can be ordererd from*** 1.Saraswati Pustak Bhandar, Hathikhana, Ratan pole, Ahmedabad-380001 2. Parshva Prakashan, Nisha Pole, Zaveriwad, Ahmedabed-380001, Pages-102, Price-Rs. 108, Year 1999

समन्तभद्र (५५०ई.) की आप्तमीमांसा जैन अनेकान्तवाद के स्थापक ग्रन्थों में प्रमुख है। इस पर अकलंक की अष्टशती, विद्यानन्द की अष्टसहस्री एवं यशोविजय का अष्टसहस्रीतात्पर्यविवरण टीकाएँ प्रसिद्ध हैं। न्याय, वैशेषिक, बौद्ध एवं जैन दर्शन-ग्रन्थों के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ. नगीन जे. शाह ने आप्तमीमांसा का अंग्रेजी अनुवाद करते हुए उपयोगी टिप्पण एवं सारगर्भित विस्तृत भूमिका दी है। साथ ही उन्होंने आप्तमीमांसा पर भट्ट अकलंक (७२० से ७८० ई.) की 'अष्टशती' का भी प्रकाशन किया है। डॉ. नगीन जे. शाह के विद्वत्तापूर्ण टिप्पण एवं भूमिका से निश्चित रूप से विद्वज्जगत् लाभान्वित होगा। आप्तमीमांसा को विषयवस्तु के आधार पर १० खण्डों में विभक्त किया गया है। अकलंक द्वारा रचित टीका अष्टशती अपने आप में स्वतन्त्र कृति जैसी है। डॉ. नगीन जे. शाह ने अकलंक की कृतियों की प्रशंसा करते हुए भूमिका (Introduction) में लिखा है- "I feel that well known Nyaya logician Jayanta Bhatta (5th century A.D.) had consulted Akalanka's works. He refers to and refutes some Jain views in the ninth chapter of his famous Nyayamanjari. His commentator chakradhara (10th-11th century A.D.), while commenting on Jayanta's concerned Sentences, reproduces five Karikas from Akalanka's Siddhiviniscaya and explains them extensively in his own words. This is very important and notcworthy. One more kashmiri pandit Bhattanarayan Kantha (10th-11th century A.D.) refers to Akalanka and his granthtraya by name is his vritti on Mrigedratantra."

धर्म है महामंगल *–श्री सुभद्रमुनि जी महाराज,* ***सम्पादक***– *श्री*

अमित मुनि जी ***प्रकाशक***– *मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन, के.डी. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली–110034,* ***पृष्ठ*** *116,* ***मूल्य***–*25 रुपये,* ***सन्*** *2002*

इस पुस्तक में दशवैकालिक सूत्र की प्रथम गाथा 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' को आधार बना कर श्री सुभद्रमुनि जी द्वारा फरमाए गए ६ प्रवचन संकलित हैं, जिनमें प्रथम दो प्रवचन 'धर्म' पर, तीसरा प्रवचन 'अहिंसा' पर, चतुर्थ प्रवचन 'संयम' पर, पंचम प्रवचन 'तप' पर है। षष्ठ प्रवचन 'देवा वि तं नमंसंति' शीर्षक से धर्मनिष्ठ होने की महत्ता का प्रतिपादन करता है। मुनिश्री के प्रवचनों में आगम-वाक्यों एवं प्रेरक प्रसंगों के प्रयोग से रोचकता बनी रहती है।

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी के जून अंक में प्रकाशित कृति 'दो तोला मांस की कीमत' को मैं मांसाहार की अंधेरी गुफा में प्रकाश स्तम्भ करार देते हुए इतना भर निवेदन करना चाहूँगा कि अन्तर्मन से शाकाहार-प्रचार में संलग्न बन्धु इस कृति का व्यापक प्रचार-प्रसार करें तो कइयों का हृदय परिवर्तन हो सकता है तथा शाकाहार-प्रचार को सार्थकता मिल सकती है। २२ वर्षीय युवक राधेश्याम गुर्जर ने इस कृति को पढ़कर शाकाहार प्रचार का संकल्प लिया तथा १५ अगस्त २००३ को पचपहाड़ की पावनधरा से इस अभियान का आगाज करने का निश्चय किया है। जिनवाणी को साधुवाद।

१०.८.2003 ***–राजेन्द्रपसाद जैन, एडवोकेट, भवानीमण्डी***

बहिन कनीनिका जी की संकलित रचना 'दो तोला मांस की कीमत' ने मुझे अहिंसा मार्ग का राही बना दिया। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं जीवनपर्यन्त इस मार्ग से जुड़ा रहूँगा।

९.८.2003 ***– राधेश्याम गुर्जर, भवानीमण्डी***

मुझे जिनवाणी पत्रिका का स्वाध्याय करने का सद्भाग्य प्राप्त होता है। इसे पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता मिलती है। आपने डॉ. नरेन्द्र भानावत जी की रिक्तता गौरवशाली सम्पादन से पूरी की है। पत्रिका पढ़ने में अति सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक है। इस महत्त्वपूर्ण जिनवाणी-सेवा के लिए मेरी ओर से अनेक बधाइयाँ स्वीकार करने की कृपा करें। पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़े, ऐसी भावना है।

3.८.2003 ***–ज्ञानचन्द जैन, जयपुर***

समाचार-संकलन

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना

卐 **परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ तथा **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा ७ के पावन सान्निध्य में इचलकरंजी में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व श्रद्धा-भक्ति के साथ उत्साह पूर्वक मनाया गया।

त्याग-तप के प्रति चातुर्मास के प्रारंभ से चतुर्विध संघ में अपूर्व उत्साह रहा। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. ने पैंतीस की दीर्घ तपस्या की तो महासती श्री उदित प्रभा जी म.सा. ने मासक्षपण तप किया। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने दस दिवसीय तपश्चर्या की। कई संत-सतियों ने पाँच-आठ तक की तपश्चर्या की वहीं श्रावक-श्राविकाओं ने तप में अनुपम पुरुषार्थ प्रदर्शित किया। परिणामस्वरूप घर-घर में तेलों की तपस्या तो हुई ही, पाँच-आठ-दस-पन्द्रह की अनेक तपस्याएँ हुईं। एक साथ ४५ अठाई तप के प्रत्याख्यान हुए तथा २८ अगस्त को १४५ दयाव्रत का आराधन इचलकंरजी के इतिहास की एक घटना है। आठ मासखमण तप हुए। तपस्वियों के नाम हैं-

१. सौ. वर्षा अनिल जी बोहरा
२. सौ. सुनीता गौतम जी सुराना
३.सौ. लाडकंवर अजीत जी खाबिया
४. सौ. प्रेमलता श्रीचंद जी बंब
५.सौ. सुरेखा अशोक जी बोहरा
६.सौ. वर्षा जितेन्द्र जी बोहरा
७.श्री गौतमचन्द जी बरडिया
८.श्री रूपचन्द जी कटारिया

सौ. सुशीला जी कल्याणमल जी बोहरा ने १५ दिवसीय तप का आराधन दो बार किया है। तपस्वी सुश्रावक श्री उदयराज जी नाहर ने दस के बाद सीधे पन्द्रह के प्रत्याख्यान किये। श्री प्रेमचन्द जी चपलोत-जयपुर, श्री जवरीलाल जी आबड़ और श्री राजेश जी बोहरा-मद्रास, श्री विपुल जी समदड़िया-लासूर, श्री धर्मेन्द्र जी लोढ़ा-मुम्बई, श्री पारसमल जी ढेलरिया-बल्लारी, श्री धीरज जी भण्डारी-फरीदाबाद आदि श्रावकों ने धर्म-साधना के साथ अठाई तप का आराधन किया। इचलकरंजी में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर सबके सहयोग से श्रावकों में एक के बजाय दो नवरंगी हुई, श्राविकाओं में भी दो नवरंगी का आयोजन सफल रहा। सौ की संख्या के ऊपर पौषध हुए। बाहर से आए श्रावकों ने भी एक नवरंगी की तथा प्रतिपूर्ण पौषध व्रत की आराधना की।

आचार्यप्रवर आदि संत-सतियों ने पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर ज्ञान, दर्शन,

चारित्र, तप, दान, संयम, आत्मशुद्धि, अहिंसा जैसे विषयों पर प्रभावी प्रवचन फरमाया। वहीं श्रावक-श्राविकाओं ने शास्त्र एवं प्रवचन श्रवण का लाभ तो लिया ही पर्वाधिराज के आठों दिन आबाल-वृद्ध अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास-बेले-तेले-चोले-पंचोले-आठ-नौ-दस के साथ दया-संवर, आयंबिल आदि विपुल प्रत्याख्यान किए। मध्याह्न में कल्पसूत्र के वाचन में सदा अच्छी उपस्थिति रही। सायं महावीर भवन में श्रावकों का एवं सतियां जी महाराज के स्थान पर श्राविकाओं के प्रतिक्रमण का नजारा देखते ही बनता था।

समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालुओं ने आचार्यप्रवर की सन्निधि में पर्वाराधन किया वहीं इचलकरंजी के श्रावक-श्राविकाओं ने उल्लास के साथ पर्व की साधना की। धर्मस्थान में कहीं जगह मिलना कठिन होते देख संघाध्यक्ष, संघमंत्री जी ने नीचे एवं ऊपर के हॉल में बैठाने की व्यवस्था की, फिर भी पुनः पुनः आकाश में विकास करके विराजने के आह्वान के साथ स्थान सुलभ कराने का प्रयास रहा।

इचलकरंजी में आचार्यप्रवर के प्रवचनामृत का पान करने के लिए धर्मसभा लालायित रहती है। सभी बहनें सामायिक साधना करने लगी हैं, पुरुष भी अधिकतर सामायिक में बैठते हैं। संघनायक का स्वास्थ्य पूर्णतः समीचीन नहीं है, फिर भी प्रवचन फरमाने का मानस रहता है। बहिनें दोपहर में ज्ञानाराधन करती हैं, युवावर्ग भी उत्साह से ज्ञानाराधन में आगे बढ़ रहा है। प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल आदि सीखे जा रहे हैं। धर्मध्यान अच्छा चल रहा है। दर्शनार्थियों का आवागमन बराबर बना रहता है। होसपेट, बैंगलोर, बीजापुर, कोप्पल, जलगांव, रत्नागिरी, पुणे आदि स्थानों से संघ रूप में तथा मद्रास, बल्लारी, सतारा, हुबली, मैसूर, सासवड़, सेलम, मुम्बई, दिल्ली, कानपुर, पंजाब, जोधपुर, कोटा, ब्यावर, विजयनगर, सवाईमाधोपुर, बून्दी, बालोतरा, नागौर, पीपाड़, कोसाना आदि स्थानों से व्यक्तिगत रूप से श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया है। पूज्य आचार्यप्रवर सबको व्यक्तिगत साधना की प्रेरणा करते हैं। धर्म की अच्छी प्रभावना हो रही है।

卐 सूर्यनगरी (जोधपुर) की प्रबल पुण्यवानी है कि बारह वर्ष के अन्तराल पश्चात् **आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ के चातुर्मास का सुयोग प्राप्त हुआ है। चातुर्मास शहर के मध्य स्थित घोड़ों का चौक सामायिक-स्वाध्याय भवन में चल रहा है। **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा ३ का चातुर्मास भी घोड़ों का चौक में है। जोधपुर के पावटा स्थित वर्द्धमान भवन में **शासन-प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** का तथा सरस्वती नगर के

स्वाध्याय भवन में **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ का चातुर्मास सुखशान्तिपूर्वक चल रहा है। उपाध्याप्रवर का चातुर्मास शहर में होने से पावटा में प्रवचन नहीं होता था, किन्तु पर्युषण पर्व के अवसर पर पावटा, नेहरू पार्क, सरस्वती नगर एवं घोड़ों का चौक-चारों स्थानों पर प्रवचन की अमृतधारा बही। नेहरू पार्क में मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के सान्निध्य में धर्माराधन का ठाट रहा। पर्युषण पर्व के दौरान चारों स्थानों के धर्मस्थानों में जनसमूह समा नहीं पा रहा था। नेहरूपार्क में तो दो दिनों के लिए ओसवाल कम्यूनिटी सेण्टर में व्याख्यान हुए। घोड़ों का चौक में ऊपरी हाल, तीसरी मंजिल और सीढ़ियों पर बैठकर श्रावक-श्राविकाओं ने प्रवचन-श्रवण किया। यही हाल पावटा का भी रहा। जहाँ बाहर बैठकर भी जन समूह प्रवचन श्रवण रहा था।

चातुर्मास के प्रारंभ से ही सूर्यनगरी में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना का क्रम प्रारम्भ हो गया था। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर अधिकांश व्यापार व्यवसाय बंद रहने से एवं पर्व के दिनों में धर्मसाधना की भावना से आबाल-वृद्ध सबने जहाँ भी अनुकूलता मिली वहाँ जाकर पर्वाराधन किया। प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण में सभी स्थलों पर विशाल उपस्थिति तो थी ही, स्वप्रेरित अनुशासन का भाव था, अतः पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल साधना सानन्द सम्पन्न हुई।

पर्वाधिराज पर्युषण पर घोड़ों का चौक, नेहरू पार्क, पावटा और सरस्वती नगर में दया-संवर और उपवास-पौषध का कार्यक्रम पूरे नौ दिन उत्साहपूर्वक चला। उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की प्रेरणा, मौसम की अनुकूलता एवं त्याग-तप की रुचि व भावना के कारण चारों क्षेत्रों में उपवास से लेकर मासखमण और उसके आगे तक की तपश्चर्याओं के प्रत्याख्यान नित्य-प्रति भावना से हुए। श्रीमती रेशमी बाई धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्द जी देसरला ने सरस्वती नगर में इकतालीस दिवसीय तप-साधना का कीर्तिमान कायम किया। निम्नांकित श्रावक-श्राविकाओं ने मासखमण तप की साधना की-

१. श्री पूनमचन्द जी दुग्गड़
२. श्री नवरतनमल जी लूंकड़
३. श्री सोहनलाल जी कांकरिया
४. श्री एवन कुमार जी नाहटा
५. श्री एकाग्रकुमार जी नाहटा
६. श्री आर. शांतिलाल जी कांकरिया
७. श्रीमती चंचलकंवर जी कुम्भट,
८. श्रीमती चन्द्रा जी कुम्भट
९. श्रीमती पद्मा जी नाहटा

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के सांसारिक भाणजे, भाणजे की पत्नी और उनके १९ वर्षीय सुपुत्र ने सुदीर्घ तप-साधना में पुरुषार्थ किया। स्थानीय संघमंत्री श्री सुमेरनाथ जी मोदी की धर्मपत्नी ने सिद्धि तप की साधना की। पर्वाधिराज

पर्युषणपर्व पर विपुल तपस्याएँ हुई। चारों स्थानों पर अब तक करीब २०० के आसपास अठाइयाँ हो चुकी हैं। तेले की तपस्या की गिनती संभव न हो सकी, अन्यथा छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं ने, नवयुवक-नवयुवतियों ने पाँच-आठ-दस-पन्द्रह तक की सैकड़ों तपस्याएँ की। तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के सांसारिक भ्राता श्री मगनमल जी भंडारी ने सोलह दिवसीय तपाराधन किया।

पर्वाधिराज पर्युषण के पूर्व धर्मचक्र व पचरंगियों के आयोजन तो हुए ही पर्व के आठ दिनों में सैकड़ों भाई-बहिनों ने संवर-पौषध की साधना कर त्याग-तप का आदर्श उपस्थित किया। कषाय-विजय की दिशा में श्रावक-श्राविकाओं ने अपनी अपनी भावनानुसार संकल्प किए। श्राविका-मण्डल के तत्त्वावधान में परीक्षाओं के सफल आयोजनों से ज्ञान के प्रति नवचेतना जगी है। बालक-बालिकाओं के संस्कार निर्माणार्थ प्रत्येक रविवार को घोड़ों का चौक में उपाध्यायप्रवर विशेष प्रवचन फरमाते हैं। इससे बालक-बालिकाओं में संस्कार-निर्माण के साथ धर्म के प्रति रुचि जागृत हुई है। इसका सुफल है कि बालक-बालिकाओं ने पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर न केवल अपनी उपस्थिति ही दर्ज की, अपितु व्रत-प्रत्याख्यानों में भी अपनी भागीदारी निभाई है। पर्युषणों में सायं घोड़ों का चौक, नेहरूपार्क, पावटा, सरस्वतीनगर के साथ हाउसिंग बोर्ड, प्रतापनगर, एवं विभिन्न कॉलोनियों में प्रतिक्रमण की व्यवस्था की गई।

दिनांक १ सितम्बर को दिन भर क्षमायाचना के लिए श्रद्धालुओं का आवागमन बना रहा। पर्युषण पश्चात् विभिन्न क्षेत्रों के श्रीसंघ उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं क्षमायाचना की भावना से आने शुरू हो गये हैं। पीपाड़ श्रीसंघ ने उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में क्षमायाचना करते भावपूर्ण विनती रखी कि हमें इस वर्ष चातुर्मास की आशा थी, लेकिन हमारी आशा फलीभूत नहीं हुई, अतः हम अगले वर्ष चातुर्मास की अभी से विनती रख रहे हैं, आप हमें अब निराश नहीं करेंगे। दिनांक ४ सितम्बर को विजयनगर के करीब सौ भाई-बहिनों ने उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में हार्दिक क्षमायाचना करते हुए विजयनगर पधारने की विनति रखी। १३ व १४ सितम्बर को संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के वार्षिक साधारण सभाओं के कार्यक्रम एवं सम्मान-समारोह के आयोजन के कारण विभिन्न क्षेत्रों के श्रद्धालु यहाँ उपस्थित होंगे।

सरस्वती नगर(जोधपुर)–सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. के चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के बाद से प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण, पौषध जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप का अच्छा उत्साह चल रहा है। एकाशन, उपवास, दया की कड़ी प्रतिदिन चल रही है। साथ ही बड़ी तपश्चर्याओं के नित्य प्रति प्रत्याख्यान हो रहे हैं। श्रीमती रेशमी बाई धर्मपत्नी सुश्रावक श्री इन्द्रचन्द जी देसरला (सरस्वतीनगर) के ४१

दिवसीय तपस्या का पूर ५ अगस्त २००३ को सम्पन्न हुआ। तपस्विनी बहिन ने यथासमय प्रवचन-श्रवण, पौषध, संवर आदि का पूरा लाभ लिया है। उन्होंने गत वर्ष भी मासखमण तप किया था। आप साधु सन्तों एवं महासतियों की सेवा में सदैव सन्नद्ध रहती हैं। श्रीमती प्रेमलता दुग्गड़ ने १३ उपवास, श्रीमती कमलाबाई पींचा ने ११ उपवास एवं श्रीमती बेबीजी मालु ने ७ उपवास की तपश्चर्या की है। सम्वत्सरी भादवा सुदी ४ दिनांक ३१.८.२००३ के दिन श्रीमती कंचन नाहटा एवं श्रीमती सुरजकंवर पारख ने ९, श्री सोहनराज सा भंसाली, श्रीमती आशा संचेती, श्रीमती निर्मला लुणिया, श्रीमती मंजू छाजेड़, श्रीमती सुनिता बरडिया ने अठाई तप के पच्चक्खाण किये जबकि श्रीमती भंवरीबाई धर्मपत्नी मोहनलाल जी देसरला ने ६ एवं श्रीमती सुआबाई धर्मपत्नी श्री ताराचन्द जी देसरला ने ५ के प्रत्याख्यान किये। श्रीमती भंवरीबाई मोहनलाल जी देसरला ने डेढ माह तक बेले-बेले पारणा किया। इसके अलावा कई भाई/बहिनों ने चार, तीन, दो एवं एक उपवास के पच्चक्खाण इस दिन किये। अठाई एवं इससे बड़ी तपश्चर्या करने वाले भाई/ बहिनों का बहुमान उन भाई/बहिनों ने किया जिन्होंने सबसे अधिक तपश्चर्या का संकल्प व्यक्त किया। पर्युषण पर्व में प्रतिदिन प्रतिक्रमण होता था। सम्वत्सरी के दिन ५० पौषध महिलाओं में एवं २५ पौषध पुरुषों में हुए। पर्युषण पर्व के दिनों में प्रतिदिन करीब २५ दया होती थी। नवकार मंत्र का जाप सूर्योदय से सूर्यास्त तक आठ दिन चला। अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की दिनांक २४, २५, २८ एवं ३० अगस्त २००३ को विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर परीक्षाएँ स्वाध्याय भवन में आयोजित की गई। इसके अलावा स्थानीय समाज द्वारा भी १७, २४ एवं ३१ को धार्मिक परीक्षाएँ आयोजित की गई। स्थानीय आसेवाल समाज के पदाधिकारी/ सदस्य आदि स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में सक्रिय रहे।

भोपालगढ़-शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना उमंग-उल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन रसिक भोपालगढ़ वासियों ने पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर अंतकृद्दशा सूत्र एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, दान, संयम आत्मशुद्धि और अहिंसा साधना पर प्रवचनामृत का पान किया वहीं दया-संवर, उपवास-पौषध के साथ तप-साधना में नित्य प्रति उपवास-बेले-तेले-पांच-आठ एवं संवर पौषध के प्रत्याख्यान हुए। यहाँ श्री शांतिलाल जी कांकरिया साथीन वालों ने २३ दिवसीय उग्र तपश्चर्या की।

निफाड़-व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा ६ के पावन सान्निध्य में निफाड़ में चातुर्मास के प्रारम्भ से ही जिनवाणी श्रवण के साथ त्याग-तप में जो पुरुषार्थ जगा, वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता

रहा। चातुर्मास के प्रारंभ से ही तेले की तपस्या की लड़ी चल रही है। उपवास, एकाशन, आयम्बिल आदि के प्रत्याख्यान प्रतिदिन हो रहे हैं। श्री सागरमल जी म.सा., आचार्य श्री शोभाचन्द जी म.सा. की पुण्यतिथि एवं श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के जन्मदिवस पर पाँच दिन दया की पचरंगी, उपवास, बेला, तेला, एकाशन, आयंबिल आदि तप हुए। नमस्कार महामंत्र का जाप ६ दिन चला। अठाई, ग्यारह आदि तपस्याएँ एक माह पूर्व हो गई थी। युवक विशेष रूपेण सामायिक साधना से जुड़े हैं। प्रार्थना एवं प्रवचन में उपस्थिति अच्छी रहती है। भाई-बहन सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल आदि सीख रहे हैं। रविवार को २ से ४ बजे तक बच्चों का शिविर लगता है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर प्रवचन सभा में महती उपस्थिति रही। व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने में श्रावक-श्राविकाओं ने अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। एक मासखमण सम्पन्न हो चुका है, दूसरा चल रहा है। दया-संवर, उपवास-पौषध के साथ बेले-तेले-पांच-आठ की अनेक तपस्याएँ हुईं।

शाहीबाग-अहमदाबाद-व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा ५ के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना श्रद्धा-भक्ति के साथ पूरे उत्साह से सम्पन्न हुई। पर्वाधिराज पर्युषण में नित्य प्रति विशाल उपस्थिति रही। संवत्सरी महापर्व का नज़ारा तो अद्वितीय था। करीब दो हजार श्रावक-श्राविकाओं ने प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। प्रतिक्रमण की व्यवस्था एक जगह कर पाना कठिन था, अतः स्थानक एवं सांचौरी भवन के ऊपर-नीचे करीब डेढ हजार प्रतिक्रमण एक साथ होते रहे। करीब तीन दर्जन अठाइयों के साथ नौ, ग्यारह, बारह, प्रन्द्रह तक की अनेक तपश्चर्याएँ भावना पूर्वक हुई। संवर-पौषध की साधना में सबका अच्छा उत्साह रहा। श्रावक-श्राविकाओं ने व्रत-प्रत्याख्यानों में भावना दर्शायी वह प्रमोदजन्य है। अहमदाबाद में रविवारीय सामूहिक दयाव्रत का कार्यक्रम एवं संवाद प्रतियोगिताएँ उत्साहपूर्वक चल रही हैं। यहाँ पर एकाशन तप के ७ मासखमण हुए हैं। पन्द्रह, बारह, ग्यारह एवं नौ दिवसीय तप के साथ ५२ अठाई तप हुए हैं। तेले की तपस्या ४ एवं पाँच की तपस्या ६ हुई है। १२ एकान्तर की तपस्या चल रही है। आठ दिनों तक नमस्कार मंत्र का अखण्ड जाप चला। बालक-बालिकाओं के शिविर में ७०-७५ बच्चे भाग ले रहे हैं। व्रत-प्रत्याख्यान बड़ी संख्या में हो रहे हैं।

बीजापुर-विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ७ के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण की मंगल आराधना सानन्द सम्पन्न हुई। दया-संवर, उपवास-पौषध के साथ वहाँ २६ अठाइयाँ और एक मासखमण हुआ। प्रवचन सभा में आबाल-वृद्ध सबकी उपस्थिति और उत्साह अवर्णनीय है। ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन की दृष्टि से बीजापुर चातुर्मास हर्षोल्लास के साथ चल रहा है।

कोटा–**व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी (सोहनजी) म.सा.** महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में उद्योग एवं शिक्षण के क्षेत्र में अग्रणी कोटा शहर में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना भक्ति भावना से उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुई। प्रवचन सभा में रिकार्ड उपस्थिति देखते ही बनती है। त्याग-तप के क्षेत्र में उपवास-बेले-तेले-पांच के कई प्रत्याख्यान हुए, वहीं करीब पचास अठाइयाँ, एक पन्द्रह और एक अड़तीस की बड़ी तपस्या हुई। श्री हरकचन्द जी जैन की माताश्री ने ३८ दिवसीय तप साधना का आदर्श उपस्थित किया।

चौथ का बरवाड़ा–**व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा ५ के पावन सान्निध्य में चौथ का बरवाड़ा में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना उत्साहपूर्वक हुई। दया-संवर, उपवास-पौषध के साथ छोटी-बड़ी अनेक तपश्चर्याएँ हुई तथा व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने में आबाल-वृद्ध सभी सक्रिय रहे। गांव में धर्म के मेले का अनुमान धर्मस्थान से निकलते श्रावक-श्राविकाओं को देखकर सहज हो जाता है। प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यों के साथ ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना के प्रति गांव का उत्साह सराहनीय है।

सतारा–**व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ के पावन सान्निध्य में सतारा में ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन के विविध कार्यक्रम चातुर्मास के प्रारम्भ से शुरू हुए। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के समय में प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति रही, वहीं व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने में सतारा के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने रुचि व भावना प्रदर्शित की। परिणाम स्वरूप नित्य-प्रति उपवास-बेले-तेले-पांच-आठ के प्रत्याख्यान हुए। संवर-पौषध में भी अच्छा उत्साह रहा। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के चातुर्मास पश्चात् छः दशकों में रत्नसंघ का पहला चातुर्मास पाकर सतारावासी हर्षित हैं और उमंग-उल्लास से ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप में पुरुषार्थ कर रहे हैं।

नदबई–**व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवतीजी म.सा.** महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की मंगल आराधना उमंग-उल्लास के साथ हुई। प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण में विशाल उपस्थिति तो थी ही, ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप में आबाल-वृद्ध सबका उत्साह प्रशंसनीय रहा। दया-संवर, उपवास-पौषध की साधना के साथ बेले-तेले-पांच-आठ-दस-पन्द्रह की कई तपस्याएँ हुई। नवकार मंत्र के जाप के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों में छोटे-बड़े सबकी रुचि व भावना का सुन्दर रूप रहा।

कुश्तला–**व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा.** महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पावन सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के समय

त्याग-तप की प्रभावना में कुश्तला का नजारा देखने लायक था। प्रवचन में गांव के जैन-जैनेतर भाई-बहिन तो आते ही, समीपवर्ती बजरिया-सवाईमाधोपुर के श्रावक-श्राविकाओं ने भी कुश्तला पहुंचकर प्रवचन श्रवण किया तथा व्रत-नियमों में सहयोग किया। परिणामस्वरूप छोटे से गांव में १५०से अधिक तेले और डेढ़ दर्जन अठाइयाँ हुई। पर्व के आठ दिनों में अखण्ड नवकार मंत्र के जाप के साथ आयंबिल की लड़ी चल रही है। दया-संवर और उपवास-पौषध में छोटे-बड़े सभी की सक्रियता प्रमोदजन्य है।

-अरुण मेहता, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

पुणे में जैनालॉजी सेण्टर का शुभारम्भ

पुणे—श्री विजयवल्लभ स्कूल भवानीपेठ, पुणे में जैनालॉजी सेण्टर का शुभारम्भ कार्यक्रम भारतीय जैन संघटना के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल जी मुथा के कर-कमलों से तथा दैनिक लोकमत के श्री निर्मल जी दर्डा की अध्यक्षता में ६ अगस्त २००३ को सम्पन्न हुआ। स्कूल के चेयरमेन श्री सुभाष जी परमार ने बताया कि विद्यार्थियों को जैन धर्म तथा नैतिक शिक्षा संस्कार से परिपूर्ण बनाने का कार्य जैनालॉजी सेण्टर करेगा। कम्प्यूटर तथा मल्टीमीडिया ग्राफिक्स के माध्यम से यह शिक्षा दी जाएगी। सेंटर का उद्घाटन श्री शांतिलाल जी मुथा ने कम्प्यूटर का बटन दबा कर किया।—**सुभाष परमार**

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरना अनिवार्य

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा आगामी परीक्षा ११ जनवरी २००४, रविवार दोपहर १२ से ३ बजे तक, कक्षा १ से ८ तक के लिये आयोजित की जायेगी। इस परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक चाहे वे पहली बार परीक्षा दे रहे हों अथवा पहले परीक्षा दे चुके हों, सभी परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र भरने अनिवार्य हैं। आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में भिजवाने की अन्तिम तिथि ३० नवम्बर २००३ है। आवेदन-पत्र प्राप्त होने पर ही प्रवेश-पत्र, रोल नम्बर आदि कार्यालय से भिजवाए जायेंगे। पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उक्त परीक्षा में स्वयं भाग लें, दूसरों को भाग लेने हेतु प्रेरित करें तथा भाग लेने वालों की अनुमोदना कर श्रुत-सेवा एवं कर्म-निर्जरा के महान् लाभ को अवश्य प्राप्त करें।

—विमला मेहता, संयोजक

जयपुर में धार्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष भी सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद् जयपुर के तत्त्वावधान में संचालित बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर दिनांक १६.०५.२००३ से १५.०६.२००३ तक सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल, महावीर नगर स्थित महावीर जैन साधना

केन्द्र एवं ०१.०६.२००३ से १५.०६.२००३ तक जवाहर नगर में आयोजित किया गया। शिविर में लगभग ४२५ बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविरार्थियों ने अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम का अध्ययन कर परीक्षा हेतु आवेदन-पत्र भी भरे। शिविर का समापन एवं पारितोषिक वितरण समारोह दिनांक २०.०७.२००३, रविवार को सुबोध पब्लिक स्कूल सभागार, रामबाग सर्किल, जयपुर में आयोजित किया गया था। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमान राजेन्द्र जी भानावत (आई.ए.एस.), सचिव श्रम आयुक्त, विशिष्ट अतिथि डॉ. सुषमा जी सिंघवी (क्षेत्रिय निदेशक, भगवान महावीर खुला विश्वविद्यालय) तथा समारोह के अध्यक्ष श्रीमान जसराज जी चौपड़ा (भूतपूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय) थे। समारोह का संचालन सुश्री शानु जैन द्वारा किया गया। परिषद्र के प्रमुख श्री प्रमोद जी हीरावत ने युवक परिषद्, जयपुर की गतिविधियों की जानकारी दी तथा शिविर संयोजक श्री अनन्त जी सेठ ने शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। **-अनिल बम्ब, सचिव**

जैन कान्फ्रेंस द्वारा राष्ट्रव्यापी श्रावक संघ अध्यक्ष/मंत्री सम्मेलन के आयोजन का निर्णय

१८ जून २००३ को मुम्बई में आयोजित जैन कान्फ्रेंस.की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में निर्णय लिया गया कि श्रावक संघों के अध्यक्ष/मंत्री का राष्ट्रव्यापी सम्मेलन यथाशीघ्र बुलाया जाए ताकि दृढ़ता पर विचार किया जा सके। इस विज्ञप्ति के माध्यम से पूरे देश में फैले राष्ट्रीय कार्यकारिणी के माननीय सदस्यों एवं पदाधिकारियों तथा कान्फ्रेंस की प्रान्तीय शाखाओं के अध्यक्ष/महामंत्रियों से अनुरोध किया जा रहा है कि सभी अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय होकर अपने क्षेत्र से अध्यक्ष/मंत्री का पूरा विवरण हमें प्रेषित करें ताकि सम्मेलन की सफलता में राष्ट्रव्यापी श्रावक संघों का पूरा सहयोग लिया जा सके। **-सुभाष ओसवाल, महामंत्री**

जिनवाणी में प्रकाशित कृति का प्रभाव

पचपहाड़ में शाकाहार प्रचार समिति की स्थापना

जिनवाणी के जून अंक में प्रकाशित कृति 'दो तोला मांस की कीमत?' से अभिभूत होकर अहिंसाप्रेमियों ने पचपहाड़ की पावनभूमि पर १५ अगस्त २००३ को 'शाकाहार प्रचार समिति' का बड़े उत्साह के साथ शुभारंभ किया। समाजसेवी बाबू श्री चन्दालाल जी जैन, अध्यक्ष स्थानकवासी समाज, भवानीमण्डी की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में शाकाहार प्रचार सेवी श्री राधेश्याम जी गूर्जर एवं अहिंसा प्रचार सेवी श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन को सम्मानित किया गया। श्री नन्दलाल जी बोहरा को अहिंसा प्रचार समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उल्लेखनीय है कि अहिंसा प्रचार समिति की स्थापना भी पचपहाड़ की भूमि पर १५ अगस्त १९९० को हुई थी।

- प्रमोद कुमार बोहरा

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई– साहुकार पेठ जैन भवन में श्रमण सूर्य मरूधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. की ११३वीं जन्म-जयन्ती उपप्रवर्तक सलाहकार श्री विनयमुनि जी 'भीम' आदि ठाणा ३ के सान्निध्य में दया तथा एकाशन दिवस के रूप में मनायी गई। लगभग ३०० भाई-बहिनों ने दया-एकाशन किए। इस अवसर पर लगभग २०० साधर्मी भाइयों को एक माह का राशन करीब ११००/- रुपये का संघ के तत्त्वावधान में वितरित किया गया। ११३ कम्बल, ११३ बेडशीट, २०० स्टील के थाल, कटोरी तथा गिलास के सेट भी वितरित किए गए। जीवदया में पर्याप्त राशि एकत्रित हुई। भटिण्डा (पंजाब) से आचार्य श्री जयमल जैन गौशाला के प्रतिनिधि आए हुए थे, दानदाताओं ने उन्हें लगभग ५ लाख रुपये की राशि भेंट की। धर्मसभा में दो बहनों ने मासखमण की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। श्रोताओं की उपस्थिति लगभग ४००० थी। इसी प्रकार आचार्यप्रवर श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की १०४वीं जन्म-जयन्ती सामायिक दिवस के रूप में मनायी गयी। संस्कार मंच के युवकों ने ३५०० सामायिक का लक्ष्य रखा था, किन्तु लगभग ५००० सामायिकें हुई।–**अखेचन्द भिडकचा**

अहमदनगर–महाराष्ट्र राज्य और जैन समाज के भूषण श्री सुरेशदादा जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड एवं आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. की कर्मभूमि आनन्दभूमि गए, जहाँ उनका गणमान्य श्रावकों ने स्वागत किया।– **अशोक (बाबू सेठ) बोरा**

तिन्दीवनम– कर्नाटक गजकेसरी श्री गणेशीलाल जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री उज्ज्वलाकुंवरजी की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री कीर्तिसुधा जी म.सा. का चातुर्मास तप-त्याग एवं व्रत-प्रत्याख्यान के साथ चल रहा है। मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. की ११३वीं जन्म-जयन्ती का आयोजन प्रभावी रहा। संघाध्यक्ष श्री सुवालाल जी कर्नावट को एस.एस. जैन संघ ने मानवरत्न की उपाधि से अलंकृत किया।– **सुरेश कुमार मुथा, मंत्री**

औरंगाबाद– आचार्यसम्राट् श्री आनन्दऋषि जी म.सा.की १०४वीं जन्म-जयन्ती महाराष्ट्र प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषि जी म.सा. आदि ठाणाा ४ एवं मालवकीर्ति श्री कीर्तिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में तप-जप के साप्ताहिक कार्यक्रमों के माध्यम से मनायी गई। चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के समय लगभग ६०० से अधिक आयम्बिल तप की आराधना हुई। जयन्ती एकाशन, दया, आयम्बिल, सामायिक, सजोड़े जाप आदि दिवसों के रूप में मनायी गई।

पूना– उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' के सुशिष्य उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' आदि ठाणा के सादड़ी सदन, गणेश पेठ में चल रहे चातुर्मास में १८ से २० अगस्त तक उपाध्यायप्रवर की पावन-स्मृति में १००८ सामूहिक तेला तप का आयोजन रखा गया।

बैंगलोर– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर द्वारा आयोजित अठारहवाँ स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर १५ से १७ अगस्त २००३ तक गणेश बाग के प्रांगण में आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में बैंगलोर के अतिरिक्त रायचूर, यादगिरि, बाणावार, चेन्नई आदि क्षेत्रों के स्वाध्यायी भी उपस्थित थे। चार वर्गों में १४५ शिविरार्थियों ने ज्ञानाराधन का लाभ लिया। शिविर में उपाध्यायप्रवर श्री पार्श्वचन्द्र जी म.सा., डॉ. पदमचन्द जी म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ।

बधाई/चुनाव

जोधपुर– सुश्री अंकिता मेहता सुपुत्री श्री जीतेन्द्र जी एवं श्रीमती वीना जी मेहता

इस वर्ष सी.बी.एस.ई. की बारहवीं कक्षा में ९०.४ प्रतिशत अंक प्राप्त कर जोधपुर में प्रथम स्थान पर रही है। वह राजमाता कृष्णाकुमारी गर्ल्स पब्लिक स्कूल की छात्रा थी तथा पढ़ने में सदैव अव्वल रहती है। उसकी बड़ी बहन आंकाक्षा मेहता ने भी वनस्थली विद्यापीठ में एम.बी.ए. के द्वितीय सेमेस्टर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

जयपुर– श्री आदित्य जैन सुपुत्र श्रीमती विमला जैन एवं श्री गौतमचन्द जी जैन (जिला रसद अधिकारी, बारां) ने आई.आई.टी. (भारतीय तकनीकी संस्थान) की प्रवेश परीक्षा प्रथम बार में ही उत्तीर्ण कर आई.आई.टी. मुम्बई में प्रवेश ले लिया है। प्रतिभाशाली छात्र को हार्दिक बधाई।

भायन्दर (मुम्बई)– श्री जितेन्द्र जैन सुपुत्र श्रीमती शान्ति महेन्द्र जी जैन ने सी.ए.की परीक्षा मात्र २१ वर्ष की वय में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। उसे सामायिक, प्रतिक्रमण एवं पच्चीस बोल भी कंठस्थ हैं तथा अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है।

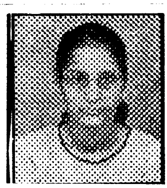

जोधपुर– सुश्री प्रिया डागा सुपुत्री श्रीमती सुमन डागा एवं श्री नवरतन जी डागा (सचिव अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर) ने बी.एस.सी. (गृह विज्ञान) के द्वितीय वर्ष में ७७.६ प्रतिशत अंक प्राप्त कर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

बैंगलोर– श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्तर के आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार सन् २००२-२००३ से बैंगलोर निवासी समता मनीषी श्री सोहनलाल जी सिपाणी को सम्मानित किया जाएगा। इस पुरस्कार के अन्तर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न, शॉल, श्रीफल तथा एक लाख रुपये की राशि प्रदान की जाती है। – **भंवरलाल कोठारी**

जोधपुर– अमित जैन सुपुत्र श्रीमती उषा जी जैन एवं श्री पारसमल जी जैन (प्रिंसिपल रीजनल ट्रेनिंग सेन्टर, यूको बैंक, अहमदाबाद) ने उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राजस्थान) की १२वीं कक्षा के वाणिज्य वर्ग की वरीयता सूची में राज्य में द्वितीय व जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उसने ८६.३८ प्रतिशत अंक प्राप्त किये। बहिन अंजली जैन ने भी पूर्व में वर्ष १६६६ में बारहवीं कक्षा में बोर्ड में राजस्थान में सातवां व जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

भोपालगढ़– आर. शांतिलाल जी कांकरिया (साथीन वाले) ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में तपस्या का अपूर्व लाभ लिया है। ३१ अगस्त को उनके ३३वाँ उपवास चल रहा था। सन् २००१ में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म. सा. के सान्निध्य में भी उन्होंने ३१ दिवसीय तप किया था। तपस्वी श्री शांतिलाल जी कांकरिया के लघुभ्राता श्री सोहनलाल जी कांकरिया की धर्मपत्नी के पीपाड़ में ३१ अगस्त को २६ की तपस्या चल रही थी तथा ३५ दिवसीय तप करने के भाव थे।

मेरठ– श्री प्रवीण कुमार जैन को उनके शोध प्रबन्ध 'भारत में पर्यावरण प्रदूषण के नियन्त्रण के लिए राजनीतिक भूमिका : एक विवेचनात्मक अध्ययन' विषय पर चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। उन्हें शाकाहार के प्रचार-प्रसार, पर्यावरण संरक्षण एवं जीव-जन्तुओं की सुरक्षा के लिए 'मेरठ में पक्षियों का धर्मार्थ अस्पताल' की स्थापना आदि कार्यों के लिए रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट द्वारा 'हस्ती अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड' से सम्मानित किया जा चुका है। आपको शैक्षिक प्रकाशन व्यवसाय (विद्या पब्लिशिंग हाउस) का दीर्घकालीन अनुभव है।

जयपुर– श्री उमेश जैन सुपुत्र श्री रघुवीर जी जैन, गायत्रीनगर , जयपुर को भाभा अणुशक्ति अनुसंधान केन्द्र की शाखा न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमि. तारापुर (मुम्बई) में 'साइन्टिफिक आफिसर' के पद पर नियुक्ति पर हार्दिक बधाई। श्री उमेश जैन ने बी.ई. (इलेक्ट्रिकल) मालवीय रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, जयपुर से ऑनर्स ७४ प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है तथा गेट २००३ में ६७.२३ प्रतिशत स्कोर किया है।

कोयम्बटूर– २७ जुलाई २००३ को आयोजित वार्षिक साधारण सभा में २००३-२००५ के लिए सम्पन्न कार्यकारिणी के चुनाव में श्री चम्पालाल जी पालरेचा

को अध्यक्ष, श्री गौतमचन्द जी बोहरा को उपाध्यक्ष, श्री राजेश जी बोहरा को मंत्री, श्री शांतिलाल जी सालेचा को सहमंत्री तथा श्री पुखराज जी श्रीश्रीमाल को कोषाध्यक्ष चुना गया है।

श्रद्धांजलि

तपस्विनी महासती श्री किरणप्रभा जी म.सा. का देवलोकगमन

नीमच—तपस्विनी महासती श्री किरणप्रभा जी म.सा. का १६ अगस्त २००३ को १० बज कर ५२ मिनट पर संथारापूर्वक बड़ी सादड़ी (राज.) में देवलोकगमन हो गया। महासती जी ने ४१ दिन की तपस्या पूर्ण करके १८ अगस्त को सानन्द पारणा सम्पन्न किया था, किन्तु दूसरे दिन अचानक महासती जी का स्वास्थ्य बिगड़ गया और आचार्यप्रवर श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण कर संथारा ग्रहण किया। दिवंगत महासती जी के वीरपिता श्री शम्भूसिंह जी कांठेड़, नीमच की दो सुपुत्रियाँ महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री मतिप्रभा जी म.सा. रत्नसंघ में जिनशासन को दिपा रही हैं।

पण्डित श्री मांडवगणे शास्त्री का देहावसान

जलगांव— संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित श्री लक्ष्मण वासुदेव मांडवगणे सर

का ८६ वर्ष की उम्र में १२ अगस्त २००३ को रक्षाबंधन के अवसर पर थोड़ी सी बीमारी के बाद स्वर्गवास हो गया। न्याय-वेदान्त-सांख्य और व्याकरण तीर्थ जैसी पदवियों को प्राप्त करने के बाद भी आप जिस सरलता, सरसता और सहृदयता से विद्यार्थियों को अध्यापन करवाते थे, उससे प्रत्येक विद्यार्थी कठिन से कठिन विषय को भी सरलता से हृदयंगम कर लेता था। आपकी प्रतिभा और सादगीपूर्ण जीवन से प्रभावित होकर आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने आपको अपने संघ के साधु- साध्वियों को प्रशिक्षित करने का दायित्व सौंपा, जिसे आपने बहुत सुन्दर तरीके से निभाया। अनेक सन्त-महासतियों को संस्कृत में आगे बढ़ाने में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. जैसे सन्तरत्न को संस्कृत में निष्णात करने में आपकी कड़ी मेहनत रही।

परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. जैसे पारखी जौहरी ने इस सच्चे रत्न को परखा और इसकी कीमत की, परिणामस्वरूप आपका जीवन सभी दृष्टियों से खुशहाल बन गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर व सन्त-सतीमण्डल के प्रति आपकी अनन्य भक्ति व आदरभाव था। समूचा रत्नसंघ आपको विशेष आदर की दृष्टि से देखता था। आपके पीछे २ सुपुत्र व ४ सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार है।

भोपालगढ़— श्रीमती पानीदेवी जी धर्मपत्नी स्व. सुश्रावक श्री पुखराज जी कर्नावट का संथारे के साथ १ सितम्बर २००३ को स्वर्ग-गमन हो गया। आप रत्नसंघ

की सुज्ञ श्राविका रत्न थी। आपकी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द के प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति थी। धर्मध्यान में उनकी रुचि व भावना होने से सामायिक, प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध एवं सेवा में सक्रियता प्रेरणादायी थी। वे हलुकर्मी श्राविका थी, इसलिए उन्हें अन्त समय में संथारे की भावना आई। आपके सुपुत्र श्री नेमीचन्द जी कर्णावट(प्राचार्य राज.उच्च माध्य. विद्यालय, अरटियाकलां) प्रमुख स्वाध्यायी एवं समर्पित संघसेवी हैं। अन्य सुपुत्र श्री पारसमल जी धर्मनिष्ठ श्रावक हैं।

जोधपुर– सुश्राविका श्रीमती सज्जनकंवर जी धारीवाल धर्मपत्नी स्व. श्री

शुभरामज जी धारीवाल का ०१ अगस्त २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं व्रत-नियमों को जीवन में स्थान देने वाली सुज्ञ श्राविका थी। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आपकी सन्त-सतियों के प्रति सेवा सराहनीय थी। आप प्रतिदिन नियमित रूप से सामायिक करती थी तथा आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रों प्रो. सुरेन्द्रराजजी, डॉ. महेन्द्रराजजी एवं श्री नरेन्द्रराजजी धारीवाल तथा तीन सुपुत्रियों के साथ भरा-पूरा परिवार छोड़ कर गई है।

उदयपुर–सरलमना सुश्राविका श्रीमती मदनकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री

नगराजजी भंडारी का ६२ वर्ष की आयु में ३० जुलाई २००३ को देहावसान हो गया। आप प्रतिदिन नियमपूर्वक सामायिक करती थी। आपके जीवन पर्यन्त रात्रि- भोजन एवं जमीकंद का त्याग था। संत-सतियों की सेवा, उपवास, जीवदया इत्यादि धार्मिक क्रियाओं में आपकी विशेष रुचि थी। देव, गुरु एवं जिनधर्म के प्रति आपकी अपार श्रद्धा-भक्ति थी। रत्नसंघ में महासती श्री निशल्यवती जी म.सा. आपकी सांसारिक भाणजी हैं, जो जिनशासन को दिपा रही हैं। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री बिरदराज जी भण्डारी एवं दो सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

गंगाशहर– सुश्रावक श्री जीतमल जी डागा सुपुत्र श्री धूड़मल जी डागा, गंगाशहर का ४७ वर्ष की आयु में दि. २६.७.२००३ को लम्बी बीमारी के पश्चात् असामयिक निधन हो गया। आपके बड़े भाई मानकचन्द व बहिन पुष्पा हैं। पिताजी श्री धूड़मलजी गंगाशहर भीनासर संघ के पूर्व अध्यक्ष हैं एवं श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के उपाध्यक्ष रहे हैं। पूरा डागा परिवार धर्मनिष्ठ, संघनिष्ठ व समाजसेवी है। अपने क्रियाशील जीवन में श्री जीतमल जी प्रायः प्रवचन-श्रवण, स्वाध्याय व

संघ-सेवा में भाग लेते थे। समता युवा संघ के सभी कार्यक्रमों में उत्साह के साथ हाथ बंटाते थे। आप एक होनहार युवा थे और श्रमणोपासक सम्पादक श्री चम्पालाल जी डागा के चचेरे भाई थे। **-चम्पालाल डागा**

जयपुर—सुश्रावक श्री विनयचन्द जी संचेती का ३० जुलाई २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठं एवं उदारमना श्रावक थे। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव था। आपका जीवन सहजता, कर्त्तव्यपरायणता, विनम्रता एवं सेवाभावना से परिपूर्ण था।

इरोड— धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सुन्दरदेवी लुणावत धर्मपत्नी स्व. श्री नेमचन्द

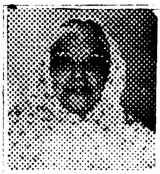

जी लुणावत, बिलासीपाड़ा, नोखामंडी (राज.) का ८१ वर्ष की उम्र में ३१ जुलाई २००३ को इरोड़ (तमिलनाडू) में नमस्कार महामंत्र का जाप सुनते-सुनते देवलोक गमन हो गया। आपका जीवन तप-त्याग और ज्ञान-ध्यान से सुवासित था। लगभग ४० वर्षों से आपके रात्रि-भोजन एवं जमीकन्द-त्याग के साथ अनेक व्रत-प्रत्याख्यान लिए हुए थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।-पवन जैन, विनोद जैन, इरोड

जयपुर— धर्मपरायण सुश्रावक श्री चांदमल जी बोथरा (बकानी वाले) का १५ अगस्त २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। व्रत-प्रत्याख्यान की दृष्टि से भी अग्रणी थे। आप सादा जीवन एवं उच्च विचारों के धनी थे। धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी-वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति आप पूर्णतः समर्पित थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे सुपुत्र डॉ. जी.सी. बोथरा एवं श्री एच.सी. बोथरा का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

पांढरकवड़ा— सुश्रावक श्री जवरीमल जी मोतीलाल जी बोगावत का ६ जुलाई २००३ को ७३ वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप सरलस्वभावी एवं मृदुभाषी होने के साथ सामायिक एवं प्रतिक्रमण नियमित रूप से करते थे। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आपने अपने जीवन में अनेक व्रत-नियम अंगीकार किए।

-प्रो. सुनील पितलीया

जयपुर— सुश्रावक श्री पारसचन्द जी कोठारी (टोड़ा वाले) का १ सितम्बर २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिभासम्पन्न, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं कर्मठ सेवाभावी थे। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति आपका समर्पित व्यक्तित्व था।

चेन्नई— सुश्राविका श्रीमती सज्जनीबाई जी छाजेड़ धर्मपत्नी स्व. श्री मीसरीमल जी छाजेड़ मूल निवासी कुड़ची का ८२ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्राविका थी तथा नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आप अनेक व्रत-नियमों का पालन करती थी तथा देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थी। आपके जीवन पर आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा । आप अपने पीछे सुपुत्र श्री सागरमलजी नागरमल जी छाजेड़ एवं पाँच सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

राष्ट्रीय समाचार

राजस्थान में जैनों को अल्पसंख्यक घोषित करने का निर्णय

जयपुर— राजस्थान सरकार ने 'जैन समाज' को अल्पसंख्यक का दर्जा देने का निर्णय लिया है। ३ सितम्बर २००३ को मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में आयोजित मन्त्रिमण्डल की बैठक में यह निर्णय लिया गया। जैन समाज को अल्पसंख्यक का दर्जा देने के लिए सरकार राजस्थान राज्य अप्ल्पसंख्यक आयोग अधिनियम-२००१ में संशोधन की कार्यवाही करेगी। इस अधिनियम के तहत राज्य में अभी तक मुसलमान, ईसाई और सिक्खों को ही अल्पसंख्यक का दर्जा मिला हुआ है। जैन समाज को हिन्दू समाज से पृथक् पूजा पद्धति एवं सिद्धान्तों के आधार पर अल्पसंख्यक घोषित करने का निर्णय लिया गया है। जैन समाज के विभिन्न संगठन विगत सात वर्षों से यह मांग कर रहे थे। छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश में जैन समाज को पहले ही अल्पसंख्यक घोषित किया जा चुका है। जैनों के अल्पसंख्यक घोषित हो जाने पर समाज की शिक्षण संस्थाओं में ५० प्रतिशत सीटों पर जैन समाज के विद्यार्थियों को प्राथमिकता का अधिकार रहेगा। अनुदानित शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षण की छूट रहेगी तथा जैन संस्कृति की अलग से पहचान हो सकेगी। इससे अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष पद पर जैन समाज को भी अवसर मिल सकेगा। सन् १९९१ के आंकड़ों के अनुसार राज्य में जैनों की संख्या १.२८ प्रतिशत है।

संशोधन-जिनवाणी के जुलाई अंक में प्रकाशित समाचारों के संबंध में निवेदन है कि व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास मुथा आरकेड, राजपथ, भवानी पेठ, मोती चौक, सतारा में है तथा फोन नं. 02162-234727(कार्या.) एवं 2311003 (निवास) हैं। मोबाईल नं. 98226-25267 है।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६२७६ श्री रूपचन्द जी जीरावला बालोतरा, बाडमेर (राज)
६२७७ Shri Virendra ji surana, Mumbai(Maha.)
६२७८ श्री नन्दलाल जी पवनकुमार जी गुगलिया, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२७९ श्री दिनेश कुमार जी कोठारी, क्षेत्र माहुली रेलवे स्टेशन, सतारा (महा.)
६२८० Shri K.R. Baghmar, Gadag (Karnataka)
६२८१ श्री दिनेश जी लोढा, कल्याण रोड, भिवाडी, ठाणे (महा.)
६२८३ श्री महिपाल जी भण्डारी, जोधपुर (राज)
६२८४ श्री नन्दलाल जी हुकमचन्द जी खींचा, जलगांव (महा)
६२८५ श्री पारसमल जी प्रकाशचन्द जी बम्ब, मदनगंज-किशनगढ (राज)
६२८६ श्री प्रवीण एस. बोरडिया, अहमदाबाद (गुजरात)
६२८७ श्री बालचन्द जी गौतमचन्द जी गाँधी, चेन्नई (तमिलनाडु)
६२८८ श्री विकास जी धारीवाल, कोयम्बतूर (तमिलनाडु)
६२८९ श्री विजयचन्द जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
६२९१ श्री ज्ञानचन्द जी तातेड, विजयनगर, जिला अजमेर (राज)
६२९२ Smt. Bhagwati Ji Jain, Vijayawada (A.P.)
६२९३ श्री जितेन्द्र जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
६२९४ श्री प्रकाशचन्द जी पी. कोठारी, मुम्बई (महा.)
६२९५ श्री शांतिलाल जी सुराणा (चंगेडीवाले), अहमदाबाद (गुजरात)
६२९६ श्री भागचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
६२९७ श्री लादुलाल जी गोखरू, डोंबिवली, थाना (महा.)
६२९८ श्री हेमचन्द जी विमलचन्द जी जैन, सेवर, भरतपुर (राज.)
६२९९ श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन, हिण्डौन सिटी, करौली (राज.)
६३०० श्री शाह गणपतलाल जी राजेन्द्र कुमार जी बांठिया, सोजतसिटी, पाली (राज.)
६३०१ श्री टी.सी. जैन, बैंगलोर (कनार्टक)
६३०२ श्री संदीप जी ढढ्ढा, नवी मुम्बई (महा.)

चेन्नई से प्राप्त गुप्तदान के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६२८२ श्रीमती दीनाबेन धर्मपत्नी श्री पृथ्वीराज जी बया, शनिवार पेठ रोड, सतारा (महा.)
६२९० श्री गौतम जी जैन बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

२०००/- श्रीमती इचरजबाई जी जवरीमल जी बोगावत, पांढरकवड़ा, यवतमाल, श्री जवरीमल जी बोगावत का स्वर्गवास दि. ६.७.२००३ को हो गया, उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

११००/- श्री एम.सागरमल जी नागरमल जी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य माताजी श्रीमती सज्जनबाई जी छाजेड़ का दि. ५.८.२००३ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में जिनवाणी को

सप्रेम भेंट।

११००/- श्री भंवरलालजी जवरीलालजी किस्तुरचन्दजी प्रकाशचन्दजी डोसी सुपुत्र स्व. श्री सोमराज जी डोसी, ब्यावर, परमश्रद्धेय पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार इचलकरंजी में दर्शनों के उपलक्ष्य में भेंट।

११००/- श्रीमती मानकंवर-नेमीचन्द जी नाहटा, रायपुर, सुपुत्र श्री एवन जी नाहटा, पुत्रवधू श्रीमती पद्मा जी नाहटा एवं पौत्र श्री एकाग्र जी नाहटा के मासक्षपण की तपस्या के उपलक्ष्य में।

११००/- मैसर्स हस्ती केबल्स, दिल्ली, सहायतार्थ।

१०००/- श्री पुखराजजी प्रकाशचन्द जी कोठारी (पीपाड़वाले), मुम्बई, श्री पुखराज जी कोठारी की पुण्यस्मृति में श्रीमती चैनीबाई जी कोठारी द्वारा जिनवाणी को भेंट।

५०१/- श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लीपेट (जिला विखलूर), पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के इचलकरंजी में दर्शनलाभ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५०१/- डॉ सरेन्द्रराजजी, डॉ महेन्द्रराजजी एवं श्री नरेन्द्रराजजी धारीवाल, जोधपुर, पूज्य माताजी श्रीमती सज्जनकंवर जी धारीवाल का स्वर्गवास दिनांक ०१.०८.०३ को होने की पुण्य स्मृति में।

५०१/- श्रीमती शान्ति जी मोदी धर्मपत्नी श्री सुमेरनाथ जी मोदी, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में १८.८.०३ को सिद्धितप पूर्ण करने की खुशी में।

५००/- श्री प्रेमराज जी बेताला, इन्दौर, श्रीमती नीतू जी बेताला पूत्रवधू श्री गौतमचन्द जी बेताला, धर्मपत्नी श्री प्रदीपकुमार जी बेताला के ६ उपवास की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने पर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

५००/- श्री रतनलाल जी सिसोदिया, डोंबिवली, ईस्ट, श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शनलाभ की खुशी में।

५००/- श्री प्रकाशचन्द जी सुशीलकुमार जी डुँगरवाल (थांवला वाले) बैंगलोर, अपनी माताश्री व दादी सा श्रीमती भंवरी बाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री फतेहराज जी डुंगरवाल की पुण्यस्मृति में भेट।

५००/- श्री प्रकाशचन्द जी सुशीलकुमार जी डुँगरवाल (थांवला वाले) बैंगलोर, पूज्य श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शन लाभ की खुशी में सप्रेम भेट।

५००/- गुप्त दान, जयपुर।

५००/- श्री गौतमचन्द जी जैन, जिला रसद अधिकारी बांरा, धर्मपत्नी श्रीमती विमला जी जैन द्वारा अठाई तप करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, गोटन।

२५१/- श्री रघुवीर जी जैन, जयपुर, श्री उमेश जी जैन को भाभा अणुशक्ति अनुसंधान केन्द्र की शाखा न्यू क्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड, तारापुर (मुम्बई) के साइण्टिफिक अधिकारी पद पर नियुक्त होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री बिरदराजजी, श्री अमितजी, श्री अरविन्दजी भण्डारी, जोधपुर, पूज्य माताश्री श्रीमती मदनकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री नगराज जी भण्डारी की पावन स्मृति में।

२५१/- श्रीमती चन्द्रा-पी.सी.अब्बानी, तमन्ना अब्बानी, जोधपुर, श्री विशाल भण्डारी का २६ अगस्त को तथा सुश्री मुस्कान भण्डारी का ३१ अगस्त को जन्मदिन होने के उपलक्ष्य में।

२५०/- श्री मोहनलाल जी चोरड़िया, इन्दौर, सुपुत्र श्री मूलचन्द जी चोरड़िया, स्नेह नगर, इन्दौर की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

२५०/- श्री मनोजकुमार जी मोहनलाल जी संचेती, अमलनेर, सुपुत्र श्री निशान्त जी के झडूले के उपलक्ष्य में।

२०१/- श्री एम आर जैन, भाईन्दर (पश्चिम) मुम्बई, अपने सुपुत्र श्री महेन्द्र जी जैन ने सी.ए. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की, इस उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री नेमीचन्द जी रांका, अहमदाबाद, सुपुत्री सौ. कां. डॉ. कोमल जी रांका का शुभविवाह बडौदा निवासी डॉ. अंकुर जी कोठारी (श्री अनिल कुमार जी जयन्तीलाल जी कोठारी) के साथ सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

२०१/- श्रीमती मंजुला-राजेन्द्र जी जैन, जयपुर, सुपुत्री अंजलि जी जैन (सुपौत्री स्व. श्री हरकचन्द जी बोहरा) के बी.ए. (कम्प्यूटर साइन्स) ऑनर्स से उत्तीर्ण करने एवं पूर्णिमा इन्जिनियरिंग कॉलेज में व्याख्याता के पद पर नियुक्ति के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री पूनमचन्द जी जामड़, जयपुर, पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में श्रीमती प्रेमलता जी जामड़ धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी जामड़ एवं सुपौत्र श्री आशीष जी जामड़ पुत्र श्री विरेन्द्र जी जामड़ की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

२०१/- श्री रतनलाल जी जैन, नदबई, श्रीमती सुशीला जी धर्मपत्नी श्री ज्ञानचन्द जी जैन की ६ की तपस्या तथा श्रीमती सीमा जी जैन धर्मपत्नी श्री नरेश जी जैन की ८ की तपस्या के उपलक्ष्य में।

२०१/- श्री धूड़मल जी डागा, गंगाशहर, बीकानेर, सुपुत्र श्री जीतमल जी डागा का २६.७.०३ को आकस्मिक निधन होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।

२०१/- श्रीमती सुशीला-प्रेमकुमार जी सिंघवी, आजीवन शीलव्रत के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२००/- श्री प्यारेलाल जी मुणोत, नागपुर, पूज्य पिताजी श्री प्रेमराज जी मुणोत रिंयासेठ की पुण्य स्मृति में भेट।

२००/- श्रीमती कमला-सुरेन्द्रमल जी सिंघवी, जोधपुर, अपने सुपौत्र शुभम सुपुत्र श्रीमती प्रतिभा-प्रवीण जी सिंघवी की प्रथम वर्षगांठ के उपलक्ष्य में।

१५१/- श्री जम्बूकुमार जी जैन, जयपुर, अपनी पूज्या माता श्रीमती प्रेमदेवी जी जैन के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

१५१/- श्री माणकमल जी पारसमल जी भण्डारी, सूरत, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शनों के उपलक्ष्य में।

१५१/- श्री शांतिलाल जी सुपुत्र श्री चम्पालाल जी सिंघवी, जोधपुर। सहायतार्थ

१०८/- श्रीमती विमलादेवी जी धर्मपत्नी श्री महावीर प्रसाद जी जैन, कोटा, अपने सुपौत्र चि. श्रेयांस सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी जैन के चतुर्थ जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

१०१/- श्री बंशीलाल जी हनुमान प्रसाद जी समीधी वाले, अलीगढ रामपुरा, महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. के चौथ का बरवाडा चातुर्मास में नवदीक्षित महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा. के आठ की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री रमेशचन्द जी त्रिलोकचन्द जी जैन (कंजौली वाले) हिण्डौन सिटी, अपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

१००/- श्रीमती सुनयना जी एवं महावीरचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपने सुपौत्र रजत के द्वितीय जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१००/- श्रीमती सुनयना जी एवं महावीरचन्द जी मेहता, जोधपुर, अपने पौत्र अक्षय के बी.ई. द्वितीय वर्ष में प्रथम स्थान प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१००/- श्री नौरतनमल जी गांग, जोधपुर, सुपौत्री सुश्री हर्षा सुपुत्री श्री अनिल कुमार जी गांग के दसवें वर्ष में प्रवेश करने की खुशी में।

५१/- श्री सुगनचन्द जी भण्डारी, जोधपुर, सुपौत्र श्री निखिल जी भण्डारी के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

५००/- श्री पारसमल जी बोहरा, मण्डली जिला-बाड़मेर (राज.)

२०१/- श्री केसरीमल जी निहालचन्द जी पटवा, अंझरत्ला तालुका-दापोली (महा) ने पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शन-लाभ के उपलक्ष्य में भेंट।

१०८/- श्रीमती विमलादेवी जी धर्मपत्नी श्री महावीर प्रसाद जी जैन, कोटा, अपने सुपौत्र चि. श्रेयांस सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी जैन के चतुर्थ जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

१०१/- श्री अभयकुमार जी सांखला, बिजयनगर, जिला- अजमेर (राज.)

१००/- श्री उत्तमचंद जी संचेती, प्रिकी, जिला जलगांव, बहन मधुबाला लोढा की सास श्रीमती लीलाबाई की पुण्य स्मृति पर जीवदया में सप्रेम भेंट।

१००/- श्रीमती सिरेकंवर जी मोदी धर्मपत्नी श्री अभयनाथ सा मोदी, अपनी सुपौत्रवधू श्रीमती संतोष मोदी (पूत्रवधू श्रीमती चन्द्रकंवर-तपस्वीनाथ जी मोदी) धर्मपत्नी श्री मुनेश्वरनाथ जी मोदी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

२५००/- श्रीमती सम्पतकंवर जी मुथा धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनलाल जी मुथा (कडलुवाले) बैंगलोर, मण्डल के साहित्य प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार-प्राप्त

१६५०/- गुप्तदान, जयपुर, आर्थिक सहयोग।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार-प्राप्त

११००/- स्वाध्याय स्थानकवासी संघ, मोड़मण्डी, द्वारा सचिव श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, मोड़मण्डी, जिला- भटिण्डा (पंजाब) की ओर से स्वाध्याय संघ, जोधपुर को सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री शांतिलाल जी कमलचन्द जी चौधरी, चेन्नई (पीपाड़ वाले), स्वाध्याय संघ, जोधपुर को सप्रेम भेंट।

५००/- सौ. मधुबाला जी ओस्तवाल, नासिक। स्वाध्याय संघ, जोधपुर की सहयोगी सदस्यता हेतु।

५००/- श्रीमती कमला बाई-अजीतराज जी सिंघवी, पनरोटी(तमिलनाडू), स्वाध्याय संघ, जोधपुर को सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री माणकमल जी पारसमल जी भण्डारी, सूरत, अपने पूज्य पिताजी श्री पारसमल जी भंडारी एवं माताश्री श्री मानकंवर जी भण्डारी की पुण्य-स्मृति में स्वाध्याय संघ, जोधपुर को सप्रेम भेंट।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO., LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

|| श्री ||

रत्न वंशीय अष्टम पट्टधर परम श्रध्देय आचार्य प्रवर पूज्य
श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणाओं के चरण कमलों में कोटी कोटी वन्दन !

जय गुरु हस्ती *जय महावीर* *जय गुरु हीरा-मान*

SANJAY SURANA

DEEPAK SURANA

AADINATH EXPORTS

The Trend Setter People

Manufacturers & Marketers :

TOYS • GAMES • NOVELTIES

31, Kurla Street, 2nd Floor, Opp. Satyam Collection,
Masjid Bunder (East), Mumbai 400 009, INDIA
Off.: 2377 4254 • Fax : 91-22-2374 6319
Mobile : 98200 73955, 3683 5318
Email: aadinathexports@hotmail.com

वीरेन्द्र कुमार बाघमलसा सुराना (नागौरवाले)
६/८३ वर्मानगर, जुना नागरदास रोड,
अंधेरी (पूर्व) मुंबई - ४०० ०६९.
फोन ; २६८३ ५३१८, २०५३ ७०५२

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2, CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान ।।

JAI GURU HASTI

GHT

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - *आचार्य श्री हस्ती*

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, Chandrappan Street

Chennai-600079(T.N.)

Ph.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI MAHAVEER

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A Division of Prithvi Securities Limited

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008, Ph. : 8553185/3059.
Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

PRITHVI SECURITIES LTD.

Unit No. 6, I floor,
Topaz Building, (Opp. To Odyssey)
63-883, Punjagutta, Hyderabad-500 082

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD **NAVARATHAN KAVAD**
RAVINDRA KAVAD **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।

– आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !

सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स

१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३

GRACE

All major credit cards accepted...

आर. एन. आई. न. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Stop existing

Start living

KALPATARU HABITAT

Dr. S. S. Rao Road, Parel

- 23 storeyed luxury twin towers
- 2 & 3 BHK Apts. & 4 BHK Penthouses
- Swimming pool, landscaped garden, clubhouse with gym & party lounge
- Squash & tennis court, mini golf putting green
- Independent car park building
- Tower B - ready possession
- Tower A - construction in full swing

KALPATARU RESIDENCY

Opp. Cine Planet, Off Sion Circle, Sion

- Premium 18 storeyed twin towers
- 2, 3 & 4 BHK Apts. & 3 BHK Penthouses
- Clubhouse with gym, squash court & party lounge
- Swimming pool, toddlers pool & landscaped garden
- Stilt & basement car parking
- Tower A - ready possession
- Tower B - nearing completion

KARMA-KSHETRA

Near Shanmukhanand Hall, King's Circle

- 25 storeyed towers with 2 wings
- 2 & 4 BHK Apts.
- Landscaped garden & clubhouse
- Independent car park building
- Ready possession

Other projects : Kalpataru Gardens - Kandivali (E), Siddhachal - Thane (W), Tarangan - Thane (W), Kamdhenu - Mulund (E), Kalpataru Enclave & Kalpataru Regency II - Pune.

KALPA-TARU **For details call: 2281 7171/2282 2888**
111, Maker Chamber IV, Nariman Point, Mumbai-400 021.
Fax : 2204 1548/2288 4778. E-mail : sales@kalpataru.com Visit : www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डां. धर्मचन्द जैन।